



सर्वेक्षण दर्पण

वर्ष-2021

अंक-18



महासर्वेक्षक का कार्यालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
देहरादून



श्री नवीन तोमर भारत के महासर्वेक्षक, कार्यालय परिसर में ध्वजारोहण करते हुए ।



श्री नवीन तोमर, भारत के महासर्वेक्षक, वार्षिक हिन्दी ई - पत्रिका "सर्वेक्षण दर्पण" अंक-17 का ऑनलाइन विमोचन करते हुए ।

सर्वेक्षण दर्पण

वर्ष-2021

अंक- 18

संरक्षक

नवीन तोमर
भारत के महासर्वेक्षक

परामर्श

नितिन जोशी
उप महासर्वेक्षक

संपादक

हरीश मिश्र
आधिकारी सर्वेक्षक, प्रभारी (रा०भा०)

संपादन सहयोग

सरोज बलूनी, पूनम काला, कै० ए०० नैगी
शान्ति प्रकाश, जसवीर सिंह ।



सम्पर्क सूत्र



महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग
डाक बाक्स सं०-37 हाथीबड़कला एस्टेट देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड)।

राजभाषा अधिनियम,
1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत द्विभाषी जारी
होने वाले (14) कागजात

1)	सामान्य आदेश	General orders
2)	ज्ञापन	Memorandum
3)	अधिसूचनाएं	Notification
4)	संकल्प	Resolution
5)	नियम	Rules
6)	करार	Agreement
7)	संविदा	Contract
8)	टेंडर नोटिस	Tender Notice
9)	अनुज्ञप्ति	Licence
10)	अनुज्ञापत्र	Permit
11)	सूचना	Notice
12)	प्रशासनिक और अन्य प्रतिवेदन	Administrative and other reports
13)	प्रेस विज्ञप्ति	Press Communique
14)	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागजात	Administrative and other reports and official papers laid before a House or House of Parliament.



पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार
एवं दृष्टिकोण संबंधित रचनाकारों के हैं।
संपादक मण्डल अथवा भारतीय सर्वेक्षण विभाग का
उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।



नवीन तोमर
Naveen Tomar
भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India



भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं० 37
देहरादून-248001, (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No. 37
Dehradun -248001, (Uttarakhand), India

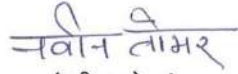


संदेश

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हो रही है कि भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय, गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका "सर्वेक्षण दर्पण" के अंक-18 का ई- प्रकाशन कर रहा है।

राजभाषा का सम्मान किसी भी देश की उस भाषा को प्राप्त होता है जो देश भर में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। हिन्दी राजभाषा हमारी साहित्य और संस्कृति की संवाहिका भी है। हिन्दी का जितना अधिक प्रचार प्रसार होगा उतना ही राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। राजभाषा हिन्दी में कार्य करना अत्यंत सरल है, हिन्दी राजभाषा हर दृष्टि से एक सुगठित व सशक्त भाषा है। इसे राजभाषा की मान्यता मिली है इसलिए हम सबका संवैधानिक दायित्व है कि हम अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में ही करें तथा इसके प्रचार व प्रसार में सहयोग करें। हिन्दी पत्रिकाएं इस उद्देश्य प्राप्ति में अत्यंत सहायक हैं।

मैं पत्रिका के सम्पादक मण्डल, इसमें प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों एवं प्रकाशन से सम्बद्ध कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।


(नवीन तोमर)
भारत के महासर्वेक्षक

Tel : 00-91-135-2744268 / 2747051-58 Extn. 5001
Fax: 00-91-135-2744268 / 2744064

E-Mail : sgi.soi@gov.in



भारत सरकार

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2)

-- X --

302, सी.जी.ओ. भवन-1, कमला नेहरू नगर

गाजियाबाद-201002 दूरभाष/फैक्स-0120-2719356

ई-मेल-ddriogzb-dol@nic.in एवं rionorthgzb@gmail.com



फा.सं.-क्षे.का.का.उ./पत्रिका-संदेश/158

दिनांक -17/08/2021

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून अपनी वार्षिक हिन्दी गृह ई-पत्रिका "सर्वेक्षण दर्पण" - अंक 18 का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि "सर्वेक्षण दर्पण" का यह अंक भी राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र सिंह मेहरा)

सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष

संपादकीय



महासर्वेक्षक कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका “सर्वेक्षण दर्पण” अंक-18 को आपके सम्मुख रखते हुए गर्व की अनुभूति हो रही है। पत्र-पत्रिकाएं समाज का वो आईना होती हैं जो व्यक्ति विशेष व समाज के कार्य कलापों की प्रस्तुति से आपके व्यक्तित्व पर प्रभाव डाल कर स्वस्थ समाज का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय की वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका ‘सर्वेक्षण दर्पण’ विगत वर्ष 2020 से कोरोना महामारी के कारण ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित की जा रही है। तथा नई-नई जानकारियों के साथ आप सभी पाठकों तक पहुंच रही है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मुद्रित संस्करण एक निश्चित स्थान तक पहुंच पाता है, किन्तु ई-पत्रिका उस स्थान तक पहुंच जाती है या देखी जा सकती है जहां तक की हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इसे आप जहां पर बैठे हैं वहीं से भारतीय सर्वेक्षण विभाग की साइट पर जा कर, राजभाषा कॉलम में क्लिक कर ‘सर्वेक्षण दर्पण’ ई-पत्रिका का पाठन व सिंहावलोकन कर सकते हैं। अपने मोबाइल से भी आप इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। यह क्षण भारतीय सर्वेक्षण विभाग के विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों, भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्रों जो कश्मीर से कन्याकुमारी व अरुणाचल से गुजरात तक फैले हुए विशाल भारतीय भूखण्ड के विभिन्न भाषा भाषियों, व संस्कृतियों के संवाहकों तक पहुंचती है। कहते हैं मनुष्यों के भीतर सृजनात्मक भाव विद्वमान होते हैं जिसे कुछ लोग संकोच के कारण व्यक्त नहीं कर पाते हैं और जो व्यक्त करतें हैं वे रचनाकार हो जाते हैं। उनके द्वारा लिखे गए लेख, कविता, कहानियां, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण, चुटकुले और अन्य संकलित जानकारियां शिक्षाप्रद तथा मनोरंजन से भरपूर होते हैं। उनके लिए गृह-पत्रिकाएं सुलभ मंच प्रदान करती हैं। हम सभी रचनाकारों के साथ नवोदित रचनाकारों का भी हृदय से स्वागत करते हैं और अपेक्षा करते हैं कि भविष्य में भी इसी प्रकार आपका सहयोग बना रहेगा।

पत्रिका को अधिक रोचक एवं उपयोगी बनाने के लिए सभी सुधी पाठकों के अनमोल सुझावों का इन्तजार रहेगा।

हरीश मित्र

(हरीश मित्र)

अधिकारी सर्वेक्षक (प्रभारी रा0भा0)
महासर्वेक्षक का कार्यालय।

❀ अनुक्रमणिका ❀

क्र० सं०	लेख/रचनाएं	लेखक/रचनाकार	पृष्ठ सं०
1.	मेरी बगिया मेरी जान	नरेश कुमार	09
2.	पीपल के मन की व्यथा की आत्मकथा	अमरदेव बहुगुणा	12
3.	गज़ल	डॉ० नीलम कुमार बिड़ला	13
4.	दुर्गम क्षेत्र में सर्वेक्षण कार्य	जे० एस० आँबेरॉय	14
5.	आस्था का महाकुम्भ	सुनील कुमार रतूड़ी	16
6.	यह कैसा बसन्त है	बिपिन चन्द पान्डेय	17
7.	परिवर्तन बनाए प्रगति	इकरार अहमद	18
8.	गज़ल	विकास शर्मा	20
9.	विश्व पर्यावरण दिवस	के के शुक्ला	21
10.	होम आइसोलेशन में कोविड मैनेजमेंट:	जय सिंह	22
11.	जीवन पथ	बिपिन चन्द पान्डेय	29
12.	विचारों का प्रतिद्वन्द	सीमा सिंह	30
13.	आधुनिक भारत में हिंदी का अस्तित्व	स्वर्णिमा बाजपेयी,	33
14.	संस्मरण	इकरार अहमद	34
15.	संस्कार	महेश कुमार नेगी	36
16.	गज़ल	डॉ० नीलम कुमार बिड़ला	37
17.	वृद्ध वृक्ष	मकबूल जान	38
18.	'रेकी' एक परिचय	महेश कुमार नेगी	39
19.	हंसी की छोटी-छोटी बातें	प्रदीप कुमार वर्मा	40
20.	आदर्श भारतीय का जीवन-सूत्र	संकलक : एम. रामकृष्णा	41
21.	कब हम जीना भूल गए	विकास शर्मा	42
22.	एकादशी- "पुण्य कर्म"	प्रवेश कुमार वर्मा	43
23.	मजदूर का बेटा मजदूर	शान्ति प्रकाश 'जिज्ञासु'	44
24.	महासर्वेक्षक कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एक संक्षिप्त रिपोर्ट।	पूनम काला	50

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित रचनाकारों के हैं। संपादक मण्डल अथवा भारतीय सर्वेक्षण विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मेरी बगिया मेरी जान



— नरेश कुमार

कार्यालय अधीक्षक

महासर्वेक्षक का कार्यालय।

भोर होते ही सूर्य की पहली किरण से पूर्व मेरी बगिया मुझे दिल से पुकारती है। मैं अपने आप को आलस्य के आंचल से निकल कर अपनी बगिया के पहले दर्शन के लिए लालायित हो उठता हूँ। मेरे कदम स्वतः ही मेरी छोटी सी प्यारी सी किचन गार्डन की ओर चल पड़ते हैं। पहले ही दर्शन में दिल को इतना सुकून मिलता है जैसे माँ की आहट से बच्चे को सुकून मिलता है। मैं अपनी बगिया को उसके हर कोने में खड़ा होकर जी भरकर निहारता हूँ। जैसे बालक काफी समय के पश्चात् अपनी देख उसको कभी आँचल पकड़कर, में बैठकर, कभी गले से लिपटकर सुकून की अनुभूति करता है उसी भी अपने किचन गार्डन में लगे हर छोटे व बड़े से बड़े पौधे के पास उसके आसपास की घास इत्यादि अपने पौधों को ये तस्सली देने का करता हूँ कि उनका जीवन पूर्णतः है। इसके अतिरिक्त कुछ पौधों पर बोटल वाले फव्वारे से रिमझिम वर्षा उनकी नाराजगी दूर करने का प्रयास जिससे मेरे दिल को अत्यन्त खुशी अनुभूति होती है।



नादान
माँ को
कभी गोद
दिल से
प्रकार में
छोटे से
बैठकर
हटाकर
प्रयास
सुरक्षित
पानी की
करके
करता हूँ
की

इसके बाद मैं प्रातः की चाय की प्याली लेकर पुनः अपनी बगिया की ओर प्रस्थान करता हूँ। पौधों को निहारते हुए चाय की चुस्की लेने में एक अलग ही आनन्द की अनुभूति होती है जिसका विश्लेषण करना मेरे खुद के लिए भी कठिन होता है। चाय की प्याली की हर चुस्की के साथ मेरा मन अति प्रफुल्लित होता जाता है। चाय की प्याली में चाय का स्तर जितना कम होता जाता है मेरे मन में उमंग का स्तर उतना ही बढ़ता जाता है। अन्त में प्याले में चाय समाप्त हो जाती है और मेरे मन की खुशी चरम स्तर पर पहुँच जाती है। यहां पहुँच कर मेरे मन को दिन भर कार्य करने के लिए पूरे शरीर में एक नई ऊर्जा का संचार हो जाता है। इस स्फूर्ति के साथ मैं अपनी सरकारी कर्म-भूमि में अपना योगदान देने के लिए अग्रसर हो जाता हूँ।

दोपहर के समय मध्यान्तर का भोजन ग्रहण के बाद शरीर को आराम देने के लिए जैसे ही मैं कुछ क्षणों के लिए नेत्र बन्द करता हूँ तो मेरा ध्यान यकायक मेरी बगिया की ओर आकर्षित हो जाता है। मेरा शरीर कार्यालय में रहता है परन्तु मेरा मन मेरी आत्मा को लेकर पवन वेग के साथ किचन गार्डन की ओर प्रस्थान कर देता है। वहां पहुंच कर वो अपनी आत्मा की आँखों से पौधों को ऐसे निहारता है जैसे एक माँ अपने बच्चों को प्यार से निहारती है। सूर्य की तीखी रोशनी से कुछ छोटे पौधे दुःखी दिखाई देते हैं, कुछ सूर्य की गर्मी से परेशान दिखाई देते हैं। यह सब देखकर मेरे मन को अच्छा महसूस नहीं होती। मैं



मन ही मन सूर्य भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि है सूर्य देव इन नादान पौधों पर थोड़ी दया करो। अभी इन नादान पौधों की उम्र इतनी कम है कि ये आपकी प्रातःकालीन किरणों का ही सामना कर सकते हैं। अभी थोड़ा परिपक्व हो जाये तो आपकी दोपहर की गर्मी से विचलित करने वाली किरणों का सामना करने में सक्षम हो जायेंगे। अतः आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि कृपया अपने दोपहर की किरणों की गर्मी को थोड़ा नियंत्रित रखे ताकि ये नादान पौधे अपना आने वाला उज्ज्वल भविष्य देख पाये।

सायं के समय मानसिक रूप से थकान से चूर होकर जब मैं अपनी सरकारी कर्मभूमि से अपने आशियाने की तरफ प्रस्थान करता हूँ। आशियाने में पहुंच कर अपने शरीर को पानी की टंकी के गर्म पानी से साफ करके अपने घर के परिधान पहनकर फिर कुछ पल चाय की प्याली की चुस्की के साथ अपने परिवार के साथ सुकून के कुछ पल बिताने के बाद उनकी कुशलता जानकर अपनी शारीरिक थकान दूर करने के लिए थोड़ा बहुत विश्राम करता हूँ परन्तु अपने

मानसिक तनाव को दूर करने के लिए मेरे कदम यकायक ही अपनी बगिया की ओर चल पड़ते हैं और बगिया में पहुंच कर ही उन्हें शान्ति मिलती है। यहां पहुंचकर पहले अपनी किचन गार्डन के पौधों के बीच बैठ जाता हूँ। मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे कि मैं अपने परिवार के सदस्यों बीच आ गया हूँ। मानो ये पौधे नहीं मेरे परिवार के सदस्य ही हैं क्योंकि अब ये मेरी जिन्दगी का अहम हिस्सा बन चुके हैं। किचन गार्डन के सभी पौधे मेरी तरफ टकटकी लगाए देखते हैं तो ऐसा महसूस होता है जैसे वे बहुत वर्षों के बाद मिल रहे हों उनकी खुशी को मेरा मन महसूस करता है। जब मैं किसी पौधे को प्यार से सहलाता हू। तो मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे ये पौधा मेरी गोद में बैठने के लिए आतुर है। इस प्रकार मैं अपने सभी छोटे-बड़े पौधों की कुशलता का हाल-चाल जान लेता हूँ। इससे मेरे दिल को सुकून मिलता है और मेरे मन को शान्ति, इस तरह मेरी मानसिक थकावट दूर हो जाती है

और अपने पौधों के परिवार की थकावट दूर करने हेतु मैं नल से पानी की पाईप में फव्वारा जोड़कर उससे अपने सभी छोटे-बड़े पौधों पर रिमझिम बारिश करता हूँ। जिससे मेरे पौधों को पीने को पानी मिलता है और पानी के अतिरिक्त बौछारों में वे स्नान भी लेते हैं। पानी की बौछार जब किसी नादान पौधे की नाजुक कली पर पड़ती है तो मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे ये पानी की बौछार से बचने के लिए कहीं भागने की कोशिश कर रही है परन्तु पौधे भाग तो नहीं सकते इसलिए वो अपने मुँह को दायें बायें करके खुद को बचाने की कोशिश करते हैं। इनकी ये अटखेलियां देख मुझे बहुत खुशी की अनुभूति होती है। इसके बाद उनसे कुछ पलों के लिए बिछुड़कर अपने गृहस्थ आश्रम की जिम्मेदारियों को पूरा करने का प्रयास



करता हूँ।

रात्रि का भोजन ग्रहण करने के बाद कुछ सांसारिक समाचार अपने चित्रपट सूचक तंत्र से दृष्टिगोचर करने के पश्चात् अपने सभी छोटे-बड़े पौधों के रात्रि दर्शन करने तथा शुद्ध हवा लेकर खाना पचाने के उद्देश्य से अपने किचन गार्डन की ओर प्रस्थान करता हूँ। उनके साथ कुछ सुकून के पलों को बिताकर उनके लिए ईश्वर से शुभ रात्रि की मंगल कामना के साथ उनसे रात्रि की विदाई लेकर अपने शयनकक्ष की तरफ लौट आता हूँ।

बगिया में काम करना मेरा पेशा नहीं यह मेरा शौक है। इससे मेरे मन को शान्ति मिलती है। इसमें मेहनत करने से मेरा शरीर भी स्वस्थ रहता है। इससे मुझे गर्मी के मौसम में हरी सब्जी व सर्दी के मौसम में रंग बिरंगे फूल देखने को मिल जाते हैं जिनकी भीनी भीनी खुशबु मन को मोह लेती है। बगिया को देख मेरे मन में ख्याल आता है कि वो खुशी मिली है मुझको तुम्हें कैसे मैं बता दूँ। खाने को मुझे ताजा हरी सब्जियां देती इसे कैसे मैं भूला दूँ। आंगन की वो है शोभा घर का वो मुकुट है। इसके अतिरिक्त बगिया की कई विशेषताएं हैं जैसे औषधियों के इसमें कई गुण हैं और हरी सब्जियों में इसकी ताकत। मैं माली हूँ अपनी बगिया का वो मेरे दिल का सुकून है। □

पीपल के मन की व्यथा की आत्मकथा



अमरदेव बहुगुणा

सहायक भण्डार अधिकारी
महासर्वेक्षक का कार्यालय।

सब कुछ खुशहाल और ठीक ठाक ही चल रहा था
शहर की मेंड पर खड़े पीपल के पेड़ पर
सैकड़ों पक्षियों का परिवार भी मजे से पल रहा था
लोग गर्मियों में शीतल घनी छांव का आनन्द लेते थे
बदले में पीपल को कुछ भी नहीं देते थे
कभी कोई खूब सारा धागा बांध जाता था
कभी कोई तेल का दीया जला जाता था
तो कोई स्वार्थों की सारी सीमाएं ही लॉध जाता था
खैर इंसानी फितरत के हिसाब से थोड़ा और विकास हुआ
पीपल को अपने चारों ओर चबूतरा बनने जैसा आभास हुआ।
चबूतरे से ढोंगियों का भी अच्छा धंधा चलने लगा
तभी से पीपल का सांस भी कुछ मन्दा चलने लगा
चबूतरा बनने से पीपल की सांस घुटने लगी।
इसी बीच तथाकथित सड़कों के विकास का भी दौर आया
अपना उल्लू सीधा करने के लिए तीसरा एक और आया
उसने अपना फरमान सुनाया कि सड़कों का चौड़ीकरण होना है
शहर का कुछ नए अंदाज में सौन्दर्यीकरण होना है
चूंकि यह पेड़ सड़क के रास्ते में आ गया है
इसलिए इसे काटना है अब इसके अस्तित्व पर ही संकट छा गया
पीपल बेचारा सोचता ही रह गया कि कैसी अजीब घटना है
मैं तो किसी सड़क के रास्ते में नहीं आया
बल्कि सड़क ही मेरे रास्ते में आई है।
शायद ऐसे ही विकास के जरिए ही ऐसों को सड़क पर आना हो
या फिर यही नियति का कोई बहाना हो
लेकिन बेचारा पेड़ कर ही क्या सकता था।
क्योंकि कानून दण्ड और न्याय सभी तो सामर्थवान के अपने हैं
गरीब बेचारे के तो केवल कर्मों के फल और पूरे न होने वाले सपने हैं
पीपल का पेड़ तो बेचारा परोपकारी पर्यावरण का पक्का पैरोकारी था

उसे क्या पता था कि उसे कटवाने वाला तीसरा व्यक्ति सरकारी था
पेड़ों की पीड़ा को या किसी के बलिदान को किसी ने ना जाना था
सड़क के और विकल्प हो सकते थे, सड़क में आना तो काटने का बहाना था
मेरे जैसे ना जाने कितने पेड़ तथाकथित विकास की भेंट चढ़ गए
जो सड़क के रास्ते पर आने का बहाना हम बेचारे पेड़ों पर ही मढ़ गए
सोचता हूँ कि

यह कैसा विकास है ? जहां मुश्किल में सांस है
जहां तनों पर आरियां हैं मनो पर दुश्वारियां हैं
क्या भद्दा उपहास है ।
यह कैसा विकास है जहां मुश्किल में सांस है
पर्यावरण विदों का भी केवल लगता प्रदर्शन है ।



गजल

— डॉ० नीलम कुमार बिड़ला
अभिलेखपाल ग्रेड 1
आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना जी०डी०सी०।

धूप के घर नौकरी की अर्जियाँ लिखता रहा,
एक शूरज था समय की मर्जियाँ लिखता रहा ।

साथ लेकर घूमता था कह कहीं की पुस्तकें
आ के मेरे गाँव के ही मर्जियाँ लिखता रहा ।

लूटता है कौन आकर गाँव की बेटी की लाज,
एक बूढ़ा उत्तरों में वर्दियाँ लिखता रहा।

जल गई थी रसियाँ, पर पुँठ बाकी थी अभी
राख के इस ढेर को जोर रसियाँ लिखता रहा ।

उन को जिद थी बन के तूफ़ों राह में आते रहे
'नीलम' को जिद कि खुद को नन्हा आशियाँ लिखता रहा ।



दुर्गम क्षेत्र में सर्वेक्षण कार्य



जे० एस० ऑबेरॉय
अधिकारी सर्वेक्षक
उत्तराखण्ड जी० डी० सी०।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग की तरफ से सर्वे के लिये अलग-अलग क्षेत्रों में जाना होता है। कई बार इन कार्यों के लिये की गई यात्रायें बड़ी रोचक व मजेदार होती हैं और कभी-कभी ऐसी घटनाओं से सामना हो जाता है जिसे जीवन पर्यन्त भुलाना असम्भव हो जाता है। ऐसा ही यह एक संस्मरण है।

एक बार हम लोग हिमाचल प्रदेश में विभाग की तरफ से अपने दल के साथ चुम्बकीय प्रेषण हेतु जा रहे थे। लम्बी यात्रा, कच्ची पक्की सड़कें और टेढ़े मेढ़े घुमावदार रास्तों होने की वजह से शरीर तो थकावट महसूस कर रहा था पर दूसरी ओर वहां की प्यारी हरी भरी वादियों की घुमावदार सड़क कभी किसी पर्वत से नीचे उतरती तो लगता जैसे नीचे बहती नदी को छूने जा रही पास पहुंच कर, सड़क दूसरे आसमान में को पकड़ने के है। हम भी बादलों से के सच्चे चल दिये। पर जाने की वजह असमर्थ हो मिलकर वाहन जिससे न हो। दल के आवश्यक दिशा-निर्देश देकर मैं सुनसान सड़क पर ड्राईवर के साथ पास के गांव में मैकेनिक की खोज में पैदल ही चल पड़ा।



सर्पीली सुनसान व अनजान राह पर हम थोड़ा ही आगे बढ़े थे कि मोटर साइकिल की आवाज सुनाई पड़ी। मोड़ काट कर आगे बढ़े, तो देखा एक व्यक्ति परिवार सहित मोटर साइकिल पर आता दिखाई दिया। उनसे जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्हें रोका, अपना परिचय देकर जब बातचीत प्रारम्भ हुई तो पता चला कि वो सज्जन फौज से रिटायर हुये हैं और नौकरी के दौरान देहरादून में काफी समय रहे थे। फौज और सर्वे का चोली दामन का साथ है और हमारे नक्शों के ही आधार पर ही हम फौजी सीमा पर कार्य कर पाते हैं और आगे बढ़ पाते हैं। उनसे मिलकर लगा कि परदेश की अनजान राहों में मानो कोई अपना मिल गया हो। परिवार व बच्चों को घर छोड़कर वे कुछ ही समय में ही वापिस आ गये और हमें मोटर साइकिल द्वारा पास के गांव में मैकेनिक के पास ले गये। शाम होने वाली थी और

ठंड बढ़ रही थी इसलिये मैं मैकेनिक के साथ चलने में इच्छुक नहीं था पर फौजी भाई के समझाने पर साथ चलने को तैयार हो गया।

मैकेनिक अपनी मोटर साइकिल पर ड्राइवर को बिठा कर व जरूरी औजार लेकर वाहन की तरफ चल दिया। फौजी भाई ने बहुत कहा परन्तु मैं उन्हें और कष्ट नहीं देना चाहता था। अतः बस की इन्तजार करने लगा। इन्सानियत और विभाग के साथ फौजी भाई का इतना प्यार कि उन्होंने जिद पकड़ ली 'बस में बिठा कर ही घर जाऊंगा'।

थोड़ी देर में ही बस आ गयी और मैं भी वाहन के पास पहुंच गया। शाम ढलने लगी थी इस लिये साथियों ने कैम्प लगा दिया था। मुझे उतार कर "बस" अन्य सवारियों को साथ लेकर अपने अगले "पड़ाव" की ओर चल दी।

वह बस सर्पीली सड़क पर करीब आधा किमी ही गई होगी कि अचानक जोर की आवाज गूंजी। वाहन की तरफ जाते हुये मेरे पांव थम गये। मैं आवाज की दिशा में घूमा और उधर नजर गई तो वह बस सड़क से लुढ़क कर नीचे खाई की ओर गिरती दिखाई दी। फिर उसमें एक विस्फोट हुआ और नीचे बह रही नदी में समा गई और साथ ही थोड़ी देर पहले वाले मेरे सहयात्रियों को अपने साथ ले गई।

हम सब हतप्रभ और सुन्न खड़े रह गये। कुछ ही पलों में घटित हुआ दिल दहला देने वाला ऐसा भयानक दृश्य देख सब कांप कर रह गये।

उसके बाद फिर जैसे सब शान्त हो गया मगर यह शान्ति मन को व्यथित कर रही थी। मैकेनिक ने गाड़ी को ठीक कर दिया था। शाम अब रात में परिवर्तित हो रही थी। जो



वादियां दिन में दिल को लुभा रही थी अब खतरनाक दिखने लगी थी।

पूरी टीम की मनोस्थिति भांपते हुये आगे न बढ़ने व वहीं कैम्प लगाने का निर्णय लिया। ठंड थी पर महसूस नहीं हो रही थी। भूखे थे पर भूख नहीं लग रही थी। थकेहारे थे पर नींद नहीं आ रही थी। सड़क किनारे

छोटे से मैदान में कैम्प लग चुका था बैचेनी अपनी चरमसीमा पर थी।

आंखों से नींद जैसे उड़ चुकी थी। बार-बार वह भयानक दृश्य आंखों के आगे आ रहा था। "काटों तो खून नहीं" की स्थिति में बिना करवट बदलते बदलते रात बीती और सुबह उठ कर प्रभु का नाम लेते हुये आगे चल पड़े और उस स्थान पर पहुंचे तो गाड़ी रोक नीचे उतर कर 'उन' सहयात्रियों का श्रद्धापूर्वक व नम आंखों से याद कर भगवान को नमन किया। इन यात्रियों का साथ कुछ पलों का ही था—मैकेनिक की दुकान से कैम्प तक। लेकिन महसूस ऐसा हो रहा था मानो कितना लंबा समय गुजारा था। उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना कर भारी मन से हम अपने कार्य पर आगे बढ़ चले। आज जब भी समाचारों में पहाड़ी रास्तों में कोई दुर्घटना होती है मुझे वह दुर्घटना और वे सहयात्री याद आ जाते हैं। सचमुच पहाड़ी जीवन बहुत संकट पूर्ण है।

□

आस्था का महाकुम्भ



सुनील कुमार रतूडी
अधिकारी सर्वेक्षक
महासर्वेक्षक का कार्यालय

कुम्भ पर्व हिन्दू जनों का बहुत महत्वपूर्ण पर्व है। करोड़ों श्रद्धागण इस अवसर पर हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में अमृत स्नान करते हैं। प्रत्येक बारहवें वर्ष में पूर्ण कुम्भ और छह वर्ष में अर्द्ध कुम्भ का आयोजन होता है।

खगोल शास्त्र के अनुसार यह वर्ष मकर संक्रांति से प्रारम्भ होता है। इसी समय सूर्य और चंद्रमा वृश्चिक राशि में और बृहस्पति मेष राशि में प्रवेश करता है। यह दिन विशेष



मंगलकारी होता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खुलते हैं। इस दिन पावन जल से स्नान करके उच्च लोक की प्राप्ति होती है, स्नान मात्र से ही स्वर्ग दर्शन माना जाता है।

ज्योतिषियों के अनुसार कुम्भ पर्व पर ग्रहों की विशेष स्थिति और ब्रह्मांड से होने वाला विकिरण, कुम्भ स्थल को औषधिकृत करता है साथ ही पावन जल अमृतमय हो जाता है।

पौराणिक कथा के अनुसार दुर्वासा ऋषि के श्राप के कारण देवगण कमजोर हो गए थे तो असुरों ने आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। देवताओं ने भगवान विष्णु से रक्षा की विनती की। विष्णु जी ने सुर-असुरों को क्षीर सागर का मंथन करके अमृत प्राप्त करने का आदेश दिया। सुर-असुरों ने ऐसा ही किया, अमृत निकलने पर इन्द्र पुत्र जयंत अमृत कलश लेकर आकाश मार्ग में उड़ गया, दैत्यों ने बड़े प्रयास करके जयंत को पकड़ लिया। कलश प्राप्त करने हेतु छीना झपटी हुई और चार स्थानों हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में

अमृत की बूंदें गिरी थी। इसलिए इन चार स्थानों पर गंगा स्नान किया जाता है। इस दौरान देवों ने कलश की रक्षा हेतु कड़े प्रयास किए। चंद्रमा में कलश का रिसाव रोका, सूर्य को खंडित होने से बचाया, बृहस्पति को अपहरण से बचाया और शनि के देवेन्द्र के भय से कलश की रक्षा की। भगवान विष्णु ने प्रकट होकर उचित रूप से देव-दानवों में अमृत प्रसाद दिया और बारह दिनों तक चले युद्ध का अंत किया।

देवताओं के बारह दिन बारह वर्ष के समान होते हैं। इसी कारण कुंभ स्थान भी बारह हैं। चार स्थल पृथ्वी पर आर आठ स्थल देवलोक में हैं। मनुष्यों हेतु पृथ्वी के कुंभ स्थलों पर ही दर्शन की अनुमति है। शेष स्थान देवताओं के लिए हैं।

इस प्रकार के महाकुंभ हमारे देशवासियों की आस्था के केन्द्र में स्थित हैं इसमें भाग लेने वाले अपने लिए और परमार्थ हेतु स्नान करते हैं। संत मुनि और तपस्वीगण इस दौरान मानवकल्याण हेतु आराधना करते हैं और समस्त मानव जाति को आर्शिवाद देकर कृतार्थ करते हैं। □

यह कैसा बसन्त है



—बिपिन चन्द पान्डेय
अधिकारी सर्वेक्षक
जी.आई.एस.टी.सी., (म0स0का0)।

जीवन का यह कैसा बसन्त है
चारों ओर शान्ति पर आंतरिक द्वन्द है।

मौसम का वही अपना सुहाना रंग है
पर मानव जीवन शैली, बेरंग है।

हवाओं में वहीं, चिर-परिचित सुगंध है
पर मन व्याकुल और बेचैन है।

कोयल डाली-डाली गीत सुना रही है।
पर मानव की किलकारियां सुगबुगा रही हैं।

शायद यह काल का एक नया अभिनय है
जो सदा-सर्वदा एक नया इतिहास रचता है।

प्रकृति बेचैन है, फिर भी मुस्कुरा रही है
हौसला मत छोड़, यह मौन संदेश हम तक पहुंचा रही है। ●

परिवर्तन बनाए प्रगति



— इकरार अहमद

प्रबंधक (वरिष्ठ)

दक्षिण मुद्रण वर्ग ।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, यह तो सर्वविदित है, किंतु आज के परिपेक्ष्य में यह प्रतिष्ठा का विषय बन गया है। कैसे जल्दी अमीर हो जाये, दुनिया के सारे सुख ऐशो आराम अपने कदमों में डालने के लिये हर कोई बेताब है, चाहे उसके लिए कोई भी तरीका अपनाना पड़े किसी को गुरेज नहीं है।

सत्तर और अस्सी के दशक में शहरों में इतनी भीड़ नहीं थी और ना ही इतनी मारामारी, लोग निरोग और लम्बी आयु जिया करते थे। आपस में भाईचारा हर तरफ परिलक्षित होता था। घर में कुल दस बारह लोग होते थे, चाचा, ताऊ, दादा, दादी, चाचियां, भाभी, भाई, बहन एक छत के नीचे निवास करते थे। घर का एक दो सदस्य घर से दूर किसी शहर में नौकरी करता था, अन्य सदस्य खेती बाड़ी इत्यादि में मशरूफ रहते थे। शिक्षा के नाम पर सरकार द्वारा निर्मित प्राइमरी स्कूल, पूर्व माध्यमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय कई गांवों के बीच में हुआ करता था और सभी के बच्चे इन्हीं स्कूलों में पढ़ते थे। अध्यापक भी निष्ठा के साथ अपने ज्ञान के अनुसार किसी भेदभाव के बिना शिक्षा देते थे पढ़ने वालों को भी निरन्तर अग्रसर रहने की ललक रहती थी जैसे प्राइमरी, मिडिल, इन्टरमीडिएट तक की शिक्षा ग्रहण कर लेते थे, यह बात अलग थी कि आगे की पढ़ाई का प्रतिशत कम होता चला जाता था। नौकरियों की मारामारी भी नहीं थी, बहुत सारे लोग तो नौकरी में जाने से ही मना कर देते थे। क्योंकि उनको अपना गांव और घर छोड़कर नौकरी के लिए बाहर जाना पसन्द नहीं था।

गांवों का परिवेश, पास पड़ोसियों, नाते रिश्तेदारों की मुहब्बत कहीं न कहीं आज भी हमें विचलित कर देती है कि लौट चलें अपने पुराने परिवेश में। हर कोई, हर एक के सुख दुख में शरीक होने के लिए सदैव तत्पर रहता था, ना ऊंच नीच, अमीर गरीब, किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं था। ऐसा प्रतीत होता था कि गांवों के रहने वाले सारे लोग एक ही परिवार के सदस्य हैं। ज्यादातर लोग खेती पर निर्भर थे, जो अनाज खेतों में उत्पन्न होता था उस में पूरे परिवार का भरण पोषण हो जाता था ज्यादा की ललक भी किसी को नहीं थी। पहनने ओढ़ने के लिये लोगों के पास कपड़े होते थे ज्यादातर परिवारों में, बड़े बच्चों का कपड़ा छोटे और फिर उससे छोटे को मिल जाते थे। कहने को तो इसे उतरन कहेंगे किन्तु यह एक शाब्दिक परिभाषा है उस उतरन में भी एक प्यार था। जिसमें किसी को ना तो ईर्ष्या थी ना आत्मग्लानि। शायद लोगों की इतनी आमदनी नहीं होती थी कि हर मौके पर सबके लिये कपड़े बने। हां तीज त्योहारों पर अवश्य ही नये परिधान देखने को मिलते थे। पुस्तकों का भी आदान-प्रदान खूब हुआ करता था। जैसे ही परीक्षा समाप्त होती थी हर

विद्यार्थी अपने से बड़ी क्लास के बच्चों से सम्पर्क कर आगे की कक्षा की पुस्तकों का इंतजाम कर लेता था। उन दिनों सरकारी राशन/कोटे की दुकानों से कपड़े, कापियां, साबुन नमक इत्यादि सस्ते दामों पर सरकार द्वारा उपलब्ध करायी जाती थी।

मनोरंजन और देशाटन के लिये मेलों का आयोजन होता था। अक्सर यह फसलों की कटाई के बाद होता था तब उस मेले में दूर-दूर से लोग आते थे यहां तक कि दूर दराज के रिश्तेदार मेलों के बहाने रिश्तेदारी भी निभा जाते थे। दुख और बीमारियों का भी दूर-दूर तक नामों निशान नहीं था। खांसी, जुखाम, बुखार की दवाई तो दादी के नुस्खों से ही हो जाती थी।

नब्बे की दशक की शुरुआती समय से परिवर्तन की बयार शुरू हुई। 1982 में जब दिल्ली में एशियाई खेलों का आयोजन हुआ तो टेलिविजन पर उनका प्रसारण शुरू हुआ और गांवों में भी टेलिविजन पैसे वालों के घरों में लग गये। घरों के सबसे ऊंचाई वाले हिस्से पर एन्टीना बांधकर खेलों का लुत्फ उठाया जाने लगा। हांलाकि उससे पूर्व रेडियो पर खेलों की कमेन्ट्री और ऑल इण्डिया रेडियो तथा विविध भारती पर गाने सुना करते थे।

चित्रहार की प्रस्तुति सब लोगों को समेटकर टेलिविजन के सामने बैठने पर मजबूर कर देती थी। हफ्ते में दो दिन पिकचरें भी टीवी पर प्रसारित होने लगी थी। उसके बाद सबसे बड़ा परिवर्तन रामायण धारावाहिक के शुरू होने पर हुआ। सभी लोग अपना काम धाम छोड़कर जहां भी टीवी पर रामायण चल रहा होता था एकत्रित होकर देखने लगते थे क्या हिंदु क्या मुसलमान। सड़के घण्टे भर के लिए सुनसान हो जाती थी।

चहुंमुखी परिवर्तन शुरू हुआ, लोगों के रहन सहन में भी टीवी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। खबरें पहले सुना करते थे किन्तु इस बदलाव से खबरें देखने भी लगे। स्पर्धा भी शुरू होने लगी चैनलों की बाढ़ सी आने लगी, हर किसी ने अपने चैनल की तरक्की के लिए विज्ञापन के साथ नाना प्रकार के तरकीबों को अपनाया।

कम्प्यूटर इन्टरनेट के आगमन के पश्चात तो जैसे दुनिया ही बदल गई। रिश्तों की प्रगाढ़ता बढ़ने के साथ-साथ घटने भी लगी हर तरफ प्रतिस्पर्धा की होड़ लग गयी और इसके क्षेत्र ने विकराल रूप ले लिया। आलीशान जिंदगी, बड़ा घर, बड़ी गाड़ी, बड़ा रूतवा और ना जाने क्या क्या ? इन सब प्रगति में इक चीज यह अवश्य महसूस हो गयी कि संयुक्त परिवार की परिकल्पना का विनाश शुरू हो गया। छोटा परिवार, मेरा परिवार और हर कोई अपने को बड़ा दिखाने का प्रयास शुरू कर दिया जिससे मानवीय मूल्यों में गिरावट शुरू हो गई।

बढ़ती हुई इस तरक्की के युग में प्रायः यह देखने को मिलता है कि नौजवान पीढ़ी में पति पत्नी दोनों नौकरी करते हैं और बच्चे आया सम्भालती है या क्रेशों में पलते हैं क्योंकि यह पीढ़ी बड़े बुजुर्गों को अपने साथ नहीं रखना चाहते। नाना, नानी, दादा, दादी, चाचा, चाची, ताऊ, ताई इत्यादि। अगर यह लोग साथ रहें तो न आया की जरूरत और ना ही क्रेश की। बच्चे संस्कारों को वहां क्या सीखेंगे। जैसे तैसे बच्चे तीन साल के हुए नहीं लोग

नामी गिरामी स्कूलों में दाखिले की होड़ में लग जाते हैं। इसमें भी स्टेट्स की बात दिखाई जाती है, जैसे मेरा बच्चा या बच्ची अमुक स्कूल में पढ़ता है। क्या धन दौलत रूपये पैसे और नामी गिरामी स्कूल से संस्कार खरीदा जा सकता है। प्रतिस्पर्धा में बच्चों से बचपना छिन लिया गया है और यही बच्चे जब बड़े होते हैं तब संस्कार विहीन हो जाते हैं, इन्हें फिर परिवार की परिभाषा यही समझ में आती है कि यह मेरे मां बाप हैं और यह मेरी बहन है।

युगों युगों से चली आ रही प्रथा संयुक्त परिवारों का, अब अपनी आखिरी सांस ले रही है जो आगे चल कर और भी कष्टदायी होने वाली है। दादी नानी की लोरी राजा रानी की कहानियां सुनाने के लिए अब तो टीवी और इंटरनेट ने ले लिया है। आज की युवा पीढ़ी क्या समझेगी रिश्तों की अहमियत।

एक सुझाव समझ में आता है कि नौजवान पीढ़ी अपने मां बाप और उनके दादा दादी, नाना नानी जीवित हो तो हर संभव प्रयास करें उन्हें अपने साथ रखने की, उनका सम्मान और आदर करें यही गुण अपने बच्चों को सिखाये क्योंकि इस अवस्था को आप भी प्राप्त करने वाले हैं और तब आपके बच्चे आपको नजर अंदाज करने लगे तो शेष बचा आपका जीवन कष्टदायी हो जायेगा तब आप अपने आपका कोसेगें। सभी का सार यह है कि हमें एकदूसरों का आदर करना और आनंद देना सीखना चाहिये। यही मानव जीवन का सार हैं।



गज़ल

विकास शर्मा

एम0टी0एस0

महासर्वेक्षक का कार्यालय।

कोहरे घने हैं कासीर मगर रोशनी आ रही हैं
खिल गई थी कली अब कुम्हला रही हैं ।

बिगड़ रहा है शहर की आवो हवा का असर
तुम्हारे ईमान से जिल्लत की बदबू आ रही है ।

कोई पहुंचा नहीं इस मकान तक अरसा हुआ
मेरी आवाज ही मुझको बहला रही है ।

सांस लेते हैं मगरूरी में और जिंदा भी नहीं
सूरते हयात पर मुर्दों को हंसी आ रही हैं ।

विश्व पर्यावरण दिवस



के के शुक्ला
अधिकारी सर्वेक्षक
महासर्वेक्षक का कार्यालय।

पर्यावरण को स्वच्छ बनाएं
वन उपवन को सघन बनाएं
उजड़े बाग बगीचे में फिर
खोये हरियाली को लाएं
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएं ॥

वृक्ष धरा के हैं आभूषण
मुक्त करे ये विविध प्रदूषण
भौगोलिक रचना में फिर से
एक तिहाई का हो वितरण
जन्मदिवस पर पौध लगाकर
जीवन को हम धन्य बनाएं
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएं ॥

सूखे कुओं तालाबों में हम
जल संरक्षण विधि अपनाकर
जल संचय कर भूमि उपजाएं
वृक्ष नहीं तो वर्षा संकट
काले मेघ को कैसे लाएं?
बढ़ती आबादी को लेकर
नई किस्म की नीति अपनाएं ॥

वीरान सा है बाग बागीचा
शीतल छांव को कहां से लाएं
ऐसा प्रयत्न करें हम मिलकर
धरती को फिर स्वर्ग बनाएं
पर्यावरण का महत्व समझकर
औरों को भी खूब समझाएं ॥

वन महोत्सव का पर्व मनाएं
वन और जल के महत्व को समझें
अग्नि, प्रदूषण, रहित बनाकर
खत्म करें सारी बाधाएं
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएं ॥



होम आइसोलेशन में कोविड मैनेजमेंट:

(स्वानुभव पर आधारित)



— जय सिंह

सर्वेक्षण सहायक

महासर्वेक्षक का कार्यालय।

कोरोना महामारी ने मानव समाज को ढेरों तकलीफें दी हैं साथ ही प्रियजनों को हमसे छीना भी है। तथापि 99% से अधिक इसे हराकर सकुशल सामान्य जीवन में लौट रहे हैं। वैसे तो इससे बचे रहना ही इसका इलाज है किन्तु यदि कतिपय कारणों से ये पल्ले बंध ही जाये तो घर पर रहकर कैसे इसे मात दी जा सकती है इस पर हमारे स्वानुभव हैं, जिन्हें केवल जानकारी हेतु शेयर कर रहे हैं, ये ना सलाह हैं और ना ही सुझाव।

लक्षणों की पहचान:

इसकी शुरुआत एक दो या फिर तीन दिन तेज बुखार आने से होती है। ये बुखार सामान्यतः पैरासिटामोल खाने से ठीक हो जाता है किन्तु दवाई का असर कम होते ही फिर शुरु हो जाता है। कभी कभी दिन में ठीक रहता है तो रात को हो जाता है। इसके बाद बॉडी पेन, सिरदर्द, ह्रारत, नाक का बंद होना आदि लक्षण भी आने लगते हैं। खाने में अरुचि होने लगती है। ये ही शुरुआती लक्षण होते हैं। सही समय पर जांच: इन लक्षणों में कोविड जांच के लिए तीन से चार दिन बाद जांच करानी ठीक हो सकती है, क्योंकि इतने दिनों में जांच में सही परिणाम आने की संभावना रहती है।

सही जगह पर जांच(सम्भवतः सरकारी या सरकार द्वारा ऑथराइज्ड जांच केन्द्र पर):

जैसे ही उपरोक्त लक्षणों की पुष्टि हो जाती है तुरंत आर.टी.पी.सी.आर. जांच करानी आवश्यक होती है। इसके लिए नजदीक के जिला, सह जिला, प्राथमिक एवं अन्य सरकारी अस्पतालों से ही जांच ठीक रहती है। इसके अतिरिक्त स्थानीय प्रशासन द्वारा चिन्हित जांच केन्द्रों से ही जांच ठीक रहती है। घर पर या अन्य शार्टकट तरीकों से जांच कराने से बचना चाहिए, इससे सही रिजल्ट की संभावनाएं कम हो जाती है। इसलिए जिले के मुख्य सरकारी अस्पतालों में यह जांच देर रात्रि तक चलती है भीड़ से बचने के लिए रात्रि में जांच के लिए जाया जा सकता है। जांच के परिणाम आने में हडबडी नहीं दिखानी चाहिए क्योंकि आजकल लैब्स पर अत्यधिक नमूनों की जांच का प्रेशर है और भारत में यह जांच मैनवल तरीके से ही की जा रही है। इसलिए परिणाम की जल्दी मचाने से जांच प्रभावित हो सकती है।

टैस्ट पॉजीटिव आने पर:

टैस्ट रिपोर्ट पॉजीटिव आने पर घबराने की आवश्यकता नहीं। बस ये सोचें की ये विश्वव्यापी महामारी है इससे थोड़ी सी दवाओं और सावधानी से निपटा जा सकता है।

टैस्ट रिपोर्ट के साथ अपने डा. से सम्पर्क करें और उन्हें पूर्व तैयार फीवर एवं आक्सीजन लेवल चार्ट के साथ पूरा विवरण भेजे या बतायें। डॉ0 द्वारा सुझाई दवाओं और दिशानिर्देशों

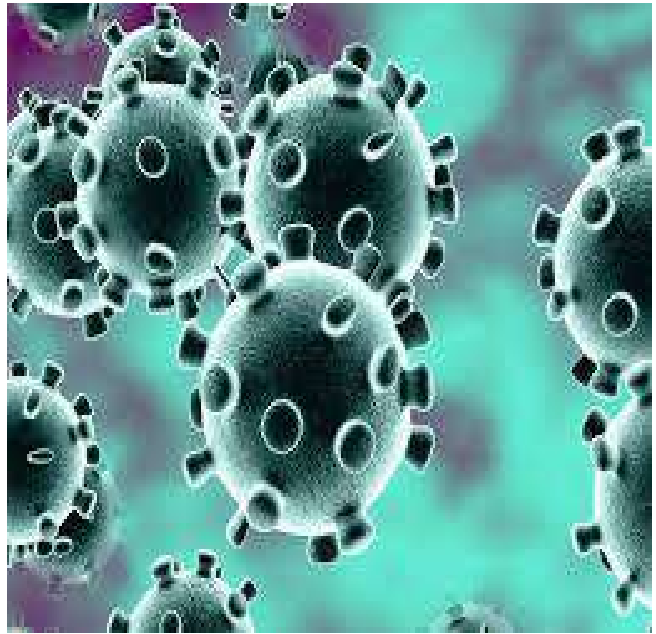
का पालन कर घर पर आइसोलेशन में रहकर शांत चित्त से अपना इलाज प्रारंभ करें। सम्भव हो तो जिले के कोविड प्रभारी चिकित्सक या मुख्य चिकित्साधिकारी से भी सलाह करें। अपने क्षेत्र के कोविड इंचार्ज से घर पर आइसोलेशन की अनुमति व्हाट्स-एप पर आवश्यक रूप से लें। जिलों से कोविड किट का वितरण निःशुल्क किया जा रहा है अपने क्षेत्र के प्रभारी अधिकारी से कोविड किट प्राप्त करने में हिचकिचाएँ नहीं। कोविड किट में सामान्यतः पांच से छः दवाइयां, एक थर्मामीटर, एक आक्सीमीटर, दस मास्क, एक सैनिटाइजर, एक डिस्पोजल बैग, एक इनवेंट्री लिस्ट, एवं एक सामान्य अनुदेश व महत्वपूर्ण फोन्स की सूची होती है।

सह नियंत्रण:

इस प्रकार घर पर होम आइसोलेशन की प्रक्रिया प्रारंभ होती है।

होम आइसोलेशन के लिए एक अलग कमरा और अटैच्ड बाथरूम होना आवश्यक है। अपना इलाज डा. की उपरोक्त सलाह से आरंभ कर दें। समय पर दवाई लें। खाने में तरल डाइट का अधिकाधिक सेवन करें। जैसे अब तक जो स्थिति बन जाती है उससे खाने में पूर्णतः अरुचि हो जाती है। मुंह का टेस्ट खराब हो जाता है। इसके बावजूद भी खाना रिकवरी के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए जो खाने की इच्छा हो उसे तरल रूप से तैयार कराएँ और पीयें। सबसे अच्छा तो ताजी सब्जियों का फीका सूप होता है जो अंदर से पुष्ट

एवं ताकत प्रदान करता है। तरल खाने का एक और फायदा है कि इससे इंस्टैंट एनर्जी मिल जाती है और ठोस खाने को पचाने में खर्च होने वाली एनर्जी बच जाती है। इस प्रकार जो भी खाया है वह सीधे शरीर को ताकत देता है। जैसे मीठे को मन नहीं करता है, फिर भी मीठे और दूध को कुछ समय के लिए बंद करना ठीक रहता है। अपने खाने पीने के लिए डिस्पोजल व हैंड नैपकिन का ही प्रयोग करें और रोज शाम इन प्रयोग किये समान को एक पालीथीन में टाइट बांधकर स्वयं घर के कूड़ादान में डालें।

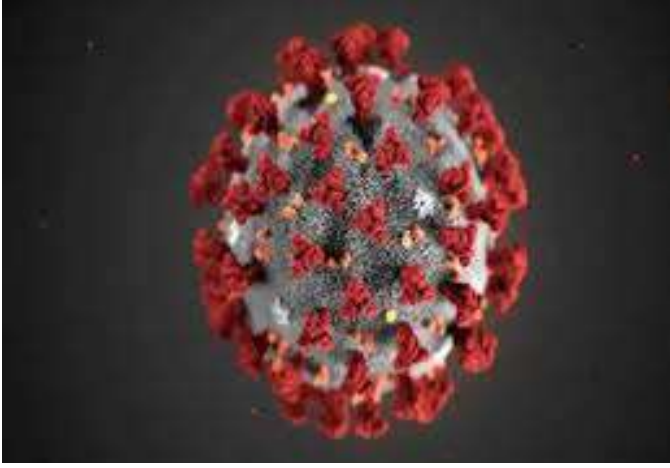


बाथरूम से बीमारी दूसरों में जाने की संभावना सबसे अधिक होती है इसलिए बाथरूम को दूसरों के प्रयोग से बचना चाहिए। यदि कतिपय एक ही बाथरूम है तो अपने प्रयोग के बाद सभी चीजें जो टच की गई हैं को लिक्विड सोप से धोने के बाद अच्छे सैनिटाइजर से सैनिटाइज करें। (ध्यान रहे लोकल सैनिटाइज टैप टॉटियों में जंग पैदा करते हैं)। आइसोलेशन रुम हवादार होना अति आवश्यक है। खिड़कियां खोल कर रखें। दिन में तीन से चार घंटे खिड़की के पास बैठकर ताजी हवा लें।

कोविड की चरम अवस्था:

जैसा प्राकृतिक है किसी भी बीमारी की एक चरम अवस्था होती है उसके बाद ही यह समाप्ति की ओर अग्रसर होती है। कोविड की चरम अवस्था में लक्षण तेजी से बदलते हैं। हल्की या तेज खांसी, चेस्ट पेन, जलन, उल्टी, दस्त, सिर दर्द, बदन दर्द, हाथों पैरों के तलवों में जलन इत्यादि लक्षण पैदा होते एवं बदलते रहते हैं। इनमें अधिक पैनिक होने या बार बार डा. से सलाह की आवश्यकता नहीं है। हां यदि दिल घबराना, सांस लेने में तकलीफ, आक्सीजन लेवल का वैरियेबल होना, धडकनों का अत्यधिक बढ़ना-घटना जैसा कुछ भी हो तो अवश्य डा. से परामर्श करें और उनकी सलाह से अतिरिक्त दवाई एवं सावधानी बरतें। तरल पदार्थों में रोज कम से कम दो नारियल पानी पीना अच्छा साबित हो सकता है। इस बीच गर्म पानी का फ्लास्क भर कर अपने पास रखें और थोड़ी थोड़ी देर में गर्म पानी पीना शरीर में अतिरिक्त पानी की पूर्ति करता रहेगा।

सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो करना है अपने बैड पर ही एक हैंडी स्ट्रीमर रख लें और सुबह



उठने से लेकर रात सोने तक अधिकाधिक मात्रा में स्टीम लेते रहें। इससे लंग्स की कार्य क्षमता बनी रहती है और त्वरित आराम भी मिलता है।

ये स्थिति असामान्य होती है इसलिए इससे निपटना भी एक महत्वपूर्ण कारक होता है। घर के दूसरे कमरों में बाकी के लोग सामान्य घरेलू जीवनशैली पर हैं और मैं अकेला या

अकेली! ऐसी फिलिंग आनी स्वाभाविक है।

इसके लिए दरवाजे के बाहर से बच्चों, पत्नी, परिजनों से बातचीत करते रहें। इस बातचीत के दौरान दरवाजा केवल 10:00 मिनट ही खुला रहना चाहिए और उस पर भी पर्दा आवश्यक होना चाहिए। बातचीत करने से मन हल्का होता है और टाइम पास भी।

दिन में सारा दिन सोना या फिर बैड पर पड़े रहना भी ठीक नहीं होता। जैसा ऊपर बताया गया। सुबह शाम तीन चार घंटे एक आरामदायक कुर्सी को खिड़की के पास लगाकर ताजी हवा अवश्य लें। जब आराम के लिए लेते तो स्वभाविक रूप से बीमारी पर ध्यान चला जाता है। इसके लिए जो लोग मैडिटेशन जानते हैं आत्मकेंद्रित होने के लिए आनापान सती, मैडिटेशन, प्राणायाम आदि का सहारा लें और विचार शून्यता की स्थिति पैदा करें। सामान्यतः लोग उपरोक्त मैडिटेशन के आदी नहीं होते ऐसे में उन्हें छोटे बच्चे (दो तीन दिन से छः सात महिने के) के सांस लेने के तरीके याद कर उन्हीं की भांति सांस लेने की कोशिश करनी चाहिए इससे विचार शून्यता उत्पन्न होगी और नींद आयेगी साथ ही नकारात्मक विचारों से बचा जा सकता है।

(नवजात शिशु के सांस लेने की प्रक्रिया को हमने कभी नोटिस नहीं किया होगा, वे पेट से सांस लेते हैं और इस प्रक्रिया में उनका पेट उठता गिरता है। यह नाभि ध्यान की स्वाभाविक स्थिति होती है जिसे नवजात शिशु से सीखा जा सकता है। एक और बात जो नवजात शिशु करते हैं , वे सांस अंदर करने में कोई यत्न नहीं करते किन्तु बाहर छोड़ने में उनकी सांसों की आवाज स्पष्ट सुनी जा सकती है । यही सांस लेने का प्राकृतिक तरीका है । किन्तु आजकल की आपाधापी में हम सांस लेने के इस प्राकृतिक तरीके से इतर आधा ही सांस लेते हैं क्योंकि हमारी सांसे पेट-नाभि तक ना जाकर फेफड़ों- छाती से ही आती जाती है। आइसोलेशन के दौरान हम एक बार इन सांसों को प्राकृतिक तरीके से व्यस्थित करने की प्रैक्टिस कर विचार शून्यता और पॉजीटिव एनर्जी बढ़ा कर इस रोग से निपट सकते हैं)।

रोग ढलते समय के लक्षण:

लगभग दस से बारह दिनों के अन्तराल पर कोरोना रोग ठीक होना शुरू हो जाता है तेजी से स्वास्थ्य लाभ होता है। किन्तु अब कुछ अन्य लक्षण पैदा होते हैं। जैसे छाती से बलगम का बाहर आना। इस प्रक्रिया में हल्की खांसी आती है और बलगम बाहर आता है। यह भी अपने आप में विकट स्थिति होती है क्योंकि खांसने से सांसों का उखडना, हार्टबीट बढ़ना , गले में दर्द आदि तकलीफें होती हैं। इनसे घबराना नहीं है। जब भी खांसी या बलगम आयें धीरे से बैठ जायें, पानी का घूंट भरें और पीयें। हल्का हल्का खॉसें और सांसों को नियंत्रित करने की कोशिश करें। बलगम को बिल्कुल भी अंदर ना घूटें और ना ही इधर उधर थूकें। थूकने के लिए पुराना पारंपरिक तरीका अपनाये। एक डिस्पोजल गिलास में थोड़ी सी राख भर दे उसमें थूकें और थूककर तुरंत किसी कागज से ढक दें और रोज रात्रि को फेके जाने वाले डिस्पोजल समान के साथ फेंके।



इसके साथ ही नाक की अंदरूनी और बाहरी नासाछिद्र में भरी गंदगी भी बाहर आनी शुरू होती है। अंदरूनी गंदगी को कदापि ना घूटे उसे मुँह में निकालकर उसी राख वाले गिलास में थूकें। नासाछिद्र की बहारी गंदगी खुजली के साथ परेशान करती है जब भी उंगली से नाक खुजलाने की कोशिश करेंगे तो ये उंगली पर लग कर बाहर आयेगी कभी कभी इस पर खून के धब्बे भी दिखाई देंगे। इसे यूं ही कहीं पर भी ना फेंके क्योंकि ये खतरनाक है और इसमें मृतप्रायः कोरोना बैक्टीरिया हो सकते हैं (देखने से भी ये फोटोज में दिखाये जा रहे कोरोना बैक्टीरिया जैसे ही दिखता है)। इसे भी उसी राख वाले गिलास में फेंकें।

अब चूंकि रिकवरी तेजी से होनी शुरू हो जाती है इसलिए भूख भी बढ़ जाती है। भूख को दबायें मत। फ्रूट जूस, या ताजे फल, नींबू पानी, कुछ अन्य तरल पेय, घर पर तैयार सूप इत्यादि का खूब सेवन करें।

रोजाना अपने कमरे में इतना अवश्य टहले जिससे सांसे फूलें ना उखडे।

इस बीच अपने लिए एक च्यवनप्राश का अलग पैक रख लें और जब भी पानी पीयें एक चम्मच या आधा चम्मच लें इससे पानी भी खूब पीया जायेगा , मुह का टेस्ट अच्छा होगा और अंदरूनी ऐनर्जी का संचयन होगा।

अब तक बुखार ठीक हो जाता है। आक्सीजन सैचुरेशन भी ठीक हो जाता है। फिर भी दोनों को नापते रहें और रिकॉर्ड करते रहें।

अन्य प्रकार के कुछ लक्षण भी प्रकट हों हैं जिनका जिक्र आवश्यक नहीं है।

दिनचर्या:

कोविड आइसोलेशन एक असामान्य अवस्था है और यह हमारी सामान्य दिनचर्या को एकदम बदल देती है जिसके लिए हमें पहले से अनुभव होता है ना तैयारी। इसलिए इसे व्यस्थित करना सबसे महत्वपूर्ण होता है।

चौबीस घंटे में अधिक से अधिक दस से बारह घंटे ही सोया जा सकता है। शेष बारह से चौदह घंटे कैसे बितायें, होम आइसोलेशन में यह एक चैलेंजिंग स्थिति है। क्योंकि व्हाट्स-एप के फार्वर्ड, फेसबुक की महत्वपूर्ण सूचनाएं, देश विदेश में खतरनाक होती स्थिति हमारे मनोबल को कम करती हैं और नकारात्मकता को बढ़ाते हैं जो इस समय बहुत ही खराब होता है। इसलिए टाइमपास के लिए अपने परम साथी(मोबाइल फोन) का सदुपयोग किया जा सकता है। शायद यही वो स्थिति हैं जहाँ हम मोबाइल को कोसने वालों को इसके जान बचाऊ फायदे भी बता सकते हैं।

अपने फैंवरेट सिंगर्स को मार्क करे, पसंदीदा गाने यू ट्यूब या फेसबुक पर सुने। आजकल इंडियन आइडल सीजन 20 पर बहुत ही प्रतिभावान बच्चे अरुणिता कांजीवाल, पवनदीप, सायली कांबले आदि ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रखा है और लता दीदी तक उनकी तारीफें कर रही हैं। इनके प्रीरिकार्डिड प्रोग्राम जो फेसबुक पर खूब वायरल हैं वे गाने सुनें। अपनी मनपसंद फिल्में देखें। जैसे फेसबुक से हमने इंटरटेनमेंट के बहुत से साधन डिस्कवर किये हैं। यहाँ आपको फिल्मों के बेस्ट सीन्स के दस से बीस मिनट के बेस्ट पार्ट विडियो मिल जायेंगे उन्हें देखें। यदि इन्हें एक बार लाइक कर देते हैं तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस स्वयं ही सम्बंधित पेज आपको दिखा देती हैं। ये समय पास का सबसे बेहतरीन माध्यम हो सकता है। यदि आध्यात्म में रुचि है और आपके कोई गुरु हों और उनके प्रवचन आदि हों तो उन्हें सुनें।

अपने पसंदीदा जो भी कुछ हो उसे खूब देखें एंजॉय करें।

बीच बीच में फोन पर रिश्तेदारों, मित्रों और परिचितों की खैर खबर लेते रहें और अपनी देते रहें। कुछ सकारात्मक बातें करें, पुराने हास्य विनोद की चर्चा करें, यादें ताजा करें और हंसे, आदि आदि...

आक्सीमीटर का प्रयोग:

आक्सीमीटर का प्रयोग शरीर में आक्सीजन सैचुरेशन नापने में किया जाता है। ये वस्तुतः बहुत ही सामान्य तरीके से काम करता है। इसे ऑन करें, अपनी तर्जनी या मध्यमा उंगली इसके बीच डालें चंद सैकेंड वेट करे और इसके डिस्प्ले पर आक्सीजन लेवल और हार्ट बीट

की दो रीडिंग आती हैं उन्हें नोट करें। सामान्यतः आक्सीजन 90 से कम और हार्टबीट 86 से अधिक नहीं होनी चाहिए।

लेकिन इनके नापने की एक चिकित्सकीय प्रक्रिया है:

पहले उपरोक्त तरीके से रीडिंग नापें। फिर कमरे में सामान्य कदमों से छः मिनट तक टहलें। फिर रीडिंग नापें। अब जो रीडिंग आई है वह हमारा वास्तविक आक्सीजन लेवल होता है। इसमें अधिक फर्क या 90से कम में डा. से परामर्श अवश्य करें।

प्राकृतिक प्राण स्थिति :

आजकल एन0पी0पी0 नेच्यूरल प्रोन पोजिशन यह टर्म प्रचलन में आया है। इसे हम प्राकृतिक प्राणवायु अवस्था भी कह सकते हैं। इसमें हमें छाती के बल लेटकर एक तकिया पेट, दूसरा घुटनों तथा तीसरा सिर के नीचे लगाकर पांच छः घंटे में कम से कम 30-45 मिनट तक लेटना होता है। ऐसा करने से हमारे लंग्स ऊपर की ओर हो जाते हैं और उनमें प्राणवायु का प्लो औसत से अधिक हो जाता है जो इस बीमारी में बहुत ही कारगर है।

वैसे इस स्थिति में लेटना कोई नयी बात नहीं है। हम अक्सर ही देखते हैं कि टीनएजर बच्चे स्वतः ही तकिये को छाती और टांगों के बीच दबाकर छाती के बल उल्टे सोते हैं। ये स्वभाविक भी है क्योंकि इस उम्र में बच्चों के अंदरूनी व बाहरी अंगों का तेजी से विकास होता है और शरीर को अतिरिक्त प्राणवायु की जरूरत होती है। ये बात दीगर है कि मातापिता गलत पारंपरिक धारणाओं के कारण बच्चों को ऐसे सोने से टोकते हैं किन्तु ये स्वभाविक है स्वतः ही हो जाता है।

उपरोक्त स्थिति में लेटने के बाद जब हम अपना आक्सीजन सैचुरेशन लेवल नापते हैं तो वह खासा बढ़ा हुआ होता है।

घरेलू उपचार एवं सावधानियां:

सामान्यतः वर्ष के दौरान होने वाली सीजनल बीमारियां घातक एवं मारक नहीं होती इसलिए उनमें घरेलू उपचार तथा नानी अम्मा के नुस्खे काम कर जाते हैं। किन्तु कोरोना इन बीमारियों से पूर्णतः अलग है और जरा सी चूक जानलेवा साबित हो सकती है।

काढा: इस बीमारी में इम्युनिटी बढ़ाने के लिए जो घरेलू नुस्खा सबसे अधिक प्रचलित हो रहा है वह है काढा।

इसे दालचीनी, कालीमिर्च, गिलोय, तुलसी के पत्ते, आदि मिलाकर बनाने और पीने के सुझाव व फार्वर्ड हजारों की संख्या में वायरल हैं। इसके क्या फायदे हैं, ये तो नहीं कहा जा सकता किन्तु इसमें मिलाये जाने वाले मसाले आयुर्वेद पद्धति में आते हैं और इस पद्धति से इलाज में वैद्य हमारी नाडी व तासीर, कफ, वात, पित्त के आधार पर नुस्खा देते हैं किन्तु लोग बिना विचारे ही काढे का प्रयोग कर रहे हैं जो शायद ठीक नहीं है।

हमने भी इम्युनिटी बढ़ाने के लिए हिमालयन क. का काढा प्रयोग किया था किन्तु तीसरे दिन ही इसने अपना विपरीत प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया और हमें दस्त

शुरू हो गये। पहले पहल तो हमें लगा ये भी बीमारी के कारण हो रहा है किन्तु जब उल्टियाँ भी शुरू हो गईं तो हमने पाट में देखा कि दस्त में केवल काले जाले जैसा कुछ निकल रहा है, ध्यान से देखने पर पता चला कि ये काढे की ही निशानियां हैं। हमने तुरंत काढा बंद

किया तो उल्टी दस्त स्वयं बंद हो गये। लोग गिलोय वटी, अश्वगंधा चूर्ण या कैप्सूल, तुलसी अर्क आदि भी बिना वैद्य की सलाह के प्रयोग कर रहे हैं जो उचित नहीं लगता। यदि ये चीजें प्रयोग करनी भी हैं तो नजदीकी आयुर्वेदिक औषधालय से परामर्श कर लें।

इसी प्रकार हल्दी की फक्की, कच्चीहल्दी और दूध, शहद के साथ अन्य चीजें मिलाकर, लहसुन की कली को खाली पेट पानी से निगलने जैसे नुस्खे भी खूब प्रचारित हो रहें हैं। अब इनका क्या फायदा हो रहा है कहना कठिन है। इसलिए इनका प्रयोग करते समय सावधानी बरतें।

इम्युनिटी बढ़ाने में हमारे घरों में जो च्यवनप्राश आता है, वह सही साबित हो सकता है क्योंकि इसकी हमारे शरीर को आदत भी होती है और उपरोक्त सभी तत्व इसमें मिले ही होते हैं। गर्मी का मौसम होने के कारण इसे भी अपनी आवश्यकता अनुसार कम या अधिक लें। इससे एक फायदा और भी है कि इसे खाने के बाद प्यास लगती है और पानी खूब पीया जाता है जो शरीर के लिए अच्छा होता है।

सावधानियां:

बुखार और आक्सीजन लेवल को नाप कर प्रतिदिन का चार्ट अवश्य बनायें। यह फोन अथवा व्हाट्स-एप पर परामर्श लेने में डा. को मदद करेगा।

आक्सीजन लेवल की वास्तविक रीडिंग उपरोक्तानुसार छ.मिनट सामान्य वाक के बाद ही लें। खांसी होने पर अकेले में भी मुंह पर नैपकिन रखें।

इधर उधर कदापि ना थूकें और ना ही नाक की कीच को इधर उधर पोंछें। उपरोक्तानुसार डिस्पोज आफ करें।

आवश्यक रूप से गर्म पानी पीयें।

वाट्सएप फार्वर्ड और सोशल मीडिया की अनावश्यक खबरों से बचें।

आपनी बीमारी और लक्षणों को दूसरों से कदापि तुलना ना करें और ना ही वे दवाएं खायें जो दूसरों को लिखी हो। अपने डा. से फोन अथवा व्हाट्स-एप पर परामर्श से ही दवा लें।

लक्षणों में परिवर्तन से घबरायें ना उनको बारीकी से नोट करते रहें और आवश्यक हो तो डा. से परामर्श करें।

बदलते लक्षणों और परिस्थितियों को नोट करना अच्छा रहता है। जब भी डा. से परामर्श करें तो इन्हें साथ रखे इससे डा. को पूरी बात कन्वे भी हो जाती है और समय भी बचता है।

डा. की अतिव्यस्तता को हमेशा ध्यान रखें। डा. से बातचीत करने से पहले पेपर पैन आवश्यक साथ रखें और कोई दवा बताने पर तुरंत सही स्पैलिंग के साथ नोट कर लें।



अपने बर्तनों को स्वयं साफ करें। हो सके तो खाने पीने के लिए डिस्पोजल प्रयोग करें। इन्हें प्रतिदिन रात को पालीथीन से बांधकर स्वयं कूड़ेदान में रखें।
वाशरूम में अनावश्यक सामान को कदापि ना छुएं।
अपने छूए टैप इत्यादि को लिक्विड सोप से तुरंत साफ कर दें।
अपने प्रयोग किये कपड़े, तौलिए आदि को किसी को भी ना छूने दें। □



जीवन पथ

—बिपिन चन्द पान्डेय

अधिकारी सर्वेक्षक

जी.आई.एस.टी.सी., (म०स०का०)।

जब जन्म लिए हम सच्चे थे
एक शान्त सलोने बच्चे थे
ममता के प्यारे आंचल में
जीवन के सपने कच्चे थे ।

उठना गिरना, गिर कर चलना
ठोकर लगने पर रो पड़ना ।
और नित्य दुपहरी बेला में
परछाई संग लड़ते रहना ।

जब बड़े हुए दुनिया देखी
अभिनय का जाल बिखेरा था
कहीं ऊंच नीच, कहीं धर्म जाति
कहीं आडंबर का मेला था ।

जो राग सजित और संचित थे
मानवता में ही निर्मित थे।
वह मूल अर्थ सब छूट गए
कुछ उम्मीदों संग टूट गए ।

तब तेज धूप में शान्ति लिए
शीतलता में उद्विग्न हुए
मन शान्त दीप सा जला लिए
गिरते उठते पथ बना लिए ।

वह कल न मिला जो चला गया
वह बल न मिला जो ढल सा गया
काया की संध्या बेला में
संताप सहित सब हर्षित हों । ●

विचारों का प्रतिद्वन्द



– सीमा सिंह

वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

राष्ट्रीय भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून ।

मेरा विदेशी दोस्त मार्टिन ऑस्ट्रिया से आया था। हम शहर के मुख्य बाजार में घूम रहे थे तो उसने कुछ शॉलें लेने की इच्छा जताई। मैं मान गई, उसने कुल पांच शॉल खरीदी और साथ ही साथ तारीफ भी की कि यहां सस्ती और अच्छी शॉलें मिल गई हैं। घर जाकर हम कॉफी पी रहे थे तो मैंने उत्सुकतावश उससे पूछ लिया कि इतनी शॉल किसके लिए ? एक मेरी मम्मी के लिए, एक मेरी मां के पति अर्थात् मार्टिन के सौतेले पिता के लिए और बाकी मेरी कुछ दोस्त के लिए। मुझे थोड़ा अचरज हुआ। उसने विस्तार से बताना शुरू किया, मेरे माँम डैड के वैचारिक मतभेद होने के कारण वह दोनों अलग-अलग होकर अन्य के साथ रहने लगे थे। मैं नये पापा और नई मम्मी सबसे मिलता हूँ पर मेरे विचार किसी से नहीं मिलते इसलिए मैं किराए के मकान में अलग रहता हूँ। इतना कहकर वह शान्त हो गया। हमारे चारों ओर कुछ देर सन्नाटा पसर गया। वैसे पाश्चात्य सभ्यता में ऐसा होना कुछ नया नहीं है। फिर मुझे सहसा ही याद आया कि मेरे ससुरजी के दोस्त का बेटा भी तो शादी के दस दिन बाद ही अपने घर से कुछ दूर पर ही किराये के मकान में रहने चला गया था। उसका भी अपने परिवार से वैचारिक मतभेद था। अब यह मतभेद केवल पाश्चात्य सभ्यता का प्रतीक नहीं रहे अपितु अब हमारे आस-पास के वातावरण में भी उजागर होने लगे हैं।

वैचारिक विषमता नई और पुरानी पीढ़ी के बीच आज से नहीं अपितु सदा से ही रही है। ऐसा नहीं कि समाज में यह विचारों का प्रतिद्वन्द आज ही जन्मा है। इसकी उत्पत्ति तो तब हुई होगी जब समाज के विकास की नींव पड़ी। विचारों की प्रतिद्वन्दिता तो दो पीढ़ी के बीच होना साधारण सी बात हैं। वर्तमान आधुनिक युग में जब प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों को लेकर सजग है तब इसका प्रभाव समाज में सरलता से प्रदर्श होने लगा है।

अब आज की पीढ़ी को ही ले लीजिए। हर बात हर विषय में उनकी स्पष्ट राय है। उस राय को बेबाकी से रखने में वे तनिक भी सकुचाना जरूरी नहीं समझते। अब वो पूर्व समय तो रहा नहीं जब बच्चे अपनी पूर्व पीढ़ी से भयभीत रहते थे क्योंकि तब अपनी संतानों पर हाथ उठाना कोई विचित्र कृत्य की श्रेणी में नहीं आता था। उसके विरुद्ध आवाज उठाना न तो उचित माना जाता था वरन् इस विषय पर तो सोचने का अधिकार भी नहीं था। विचारों की प्रतिद्वन्दिता तो तब भी होती थी परन्तु तब बाहर निकल कर नहीं आती थी। यह तो तथ्य ही है कि पच्चीस-तीस सालों के अंतर में जब एक नई पीढ़ी का उद्भव होता है तथा कुछ और साल में जब वह नई पीढ़ी अपने विचार रखने योग्य होती है तब यह स्थिति उत्पन्न होती है। इतने वर्षों में समाज की स्थिति, तकरीबन काफी कुछ बदल चुकी होती है और उस परिस्थिति में व्यक्ति के विचार न बदलें ये तो संभव नहीं।

विचार तो एक छोटा सा विषय है जब समय के साथ मानव शरीर की संरचना में ही जमीन आसमान का अंतर आया हो तो विचारों की दुहाई देना व उसे अनुचित ठहराना उचित बिंदु तो नहीं है। आदि मानव के तब का चित्र जब हम विज्ञान की पुस्तकों में देखते हैं तो विश्वास नहीं होता कि हम उसी उत्पत्ति का भाग हैं। फिर विचारों की भिन्नता से इतना दुख क्यों महसूस करें। यद्यपि दो पीढ़ी की विषम सोच अक्सर दोनों को व्यथित करती है। दोनों के दिलों को संताप के सागर में डुबोती है। तब जरूरत शांत चित्त मनन की होती है जिससे दुख की लहरें शांत हो।

मैं अब लगभग अपनी आधी उम्र पार कर चुकी हूँ उम्र के इस पड़ाव में सभी लगभग तीन पीढ़ियों से मुखातिब होते हैं। सभी ने परिवर्तन के इस दौर को देखा व महसूस किया है।

वैसे सबसे ज्यादा उथल पुथल शायद हमारी पीढ़ी ने ही अनुभव किया होगा अपने अभिभावकों का, उनके अभिभावकों के प्रति प्यार, विचार, जिम्मेदारियों का निर्वहन तो हम सबको आज भी याद है कि वो कैसे अपने बड़ों का कहा आदेश बिना किसी हील हुज्जत के पूरा करते थे। जो भी उनसे कहा गया वो अक्षरशः किया। किसी भी विचार में प्रतिद्वन्दिता का उद्भव नहीं दिखता था। यदि होता भी होगा तो उस की मात्रा इतनी कम थी कि उसका भान भी नहीं होने दिया। उन्हें तो अपने माता पिता के चरणों में स्वर्ग दिखता था। उनकी हर कथनी जैसे पत्थर की लकीर थी। अतः वहाँ तक वैचारिक मतभेद का एहसास कम से कम शून्य ही था। फिर एक पीढ़ी में बदलाव आया। ये हमारी पीढ़ी थी। ये पीढ़ी अपने अभिभावकों की भाँति आँख बंद कर अपनी पूर्व पीढ़ी को अक्षरशः नहीं मानती थी यद्यपि स्थितियाँ कोई बहुत ज्यादा भिन्न नहीं थी। बस यह पीढ़ी अपनी पूर्व पीढ़ी की सभी बातों पर आँख मूंदकर यकीन नहीं करती थी। आदर देने और आदेश मानने में यह लगभग पहली पीढ़ी जैसी ही थी। हाँ परंतु अब तक वैचारिक मतभेद कहीं ना कहीं उदय हो चुका था और क्षीण शब्दों में उनके विपक्ष में यदा कदा आवाजें भी उठने लगी थी परंतु क्षीण शब्दों में ही। खुले आम चुनौती का दौर यद्यपि शुरू नहीं हुआ था, आदेश अभी भी माने जाते थे। परंतु शिथिल विरोधों के कारण एक समस्या उत्पन्न हो चुकी थी। हमारी पूर्व पीढ़ी को लगने लगा था कि वर्तमान पीढ़ी उनका विरोध करने लगी है। हमारी पीढ़ी का यह मत था कि थोड़ा बहुत तो समय में अंतर आया ही है। अतः कुछ बदलना तो लाजिमी है। अब ये अपने कुछ निर्णय स्वयं लेने लगे थे। फिर भी यह प्रतिद्वन्दिता अभी भी इतनी मुखर नहीं थी।

परंतु जब आज अपनी अगली पीढ़ी को देखती हूँ तो पता चलता है इस समय की पीढ़ी और हममें वैचारिक मतभेद अपने चरम पर हैं क्योंकि वर्तमान पीढ़ी तो जैसे कसम खाये है कि जो हमारे अभिभावक (पूर्व पीढ़ी) हमसे कहते हैं वो बिल्कुल भी ठीक नहीं है। जमाना काफी कुछ बदल भी चुका 20 वीं और 21 वीं सदी के बीच। आजकल की पीढ़ी विषय चाहे जो भी हो उस विषय में अपनी बेबाक राय रखने में पीछे नहीं है और जो चीज उनकी नजर में उचित नहीं उसे मना करने का उनका स्पष्टवादी रवैया है। उन्होंने तो एक कहावत सीख रखी है **“साफ कहना और सुखी रहना”** फिर चाहे उनकी इस साफगोई से किसी का हृदय

कितना दुखता हो उससे उन्हें मतलब नहीं हां प्रत्यक्षतः थोड़ा दिखावा कर देंगे कि हम समझ गये कि आपको गलत महसूस हुआ। पर जो है सो है मेरे विचार नहीं बदलेंगे। अतः अपनी पीढ़ी की तरह अपनी भावी पीढ़ी से उम्मीद न रखें कि वह आपके दुख के विषय में सोचकर ज्यादा समय बरबाद करेगी।

एक पहल आप भी कर सकते हैं। आप कभी खुले हृदय से उनकी स्थिति में अपने आप को भी रख कर सोचिए। सोचिए आपने उन्हें वो वातावरण, वो शिक्षा स्वयं मुहैया कराई है। इस स्थिति में वो स्वयं नहीं पहुंचे हैं अपितु इसमें आपका भी सहयोग है। यदि आपने उनका स्वच्छन्द, व खुले वातावरण में पालनपोषण न किया होता तो क्या उनकी सोच इतनी विस्तृत हो पाती। काफी जगह तो अंततः मैं उन्हें ठीक भी पाती हूं। हमारी तरह वह मन ही मन में कुंठित न होकर खुले मन से हर चीज में वाद-विवाद करना चाहते हैं जो एक स्वस्थ परिवेश की भी निशानी है। आप कभी उनसे कहकर तो देखिए हर चीज का चुटकियों में हल है उनके पास। भले ही बहुत व्यावहारिक न हो। परंतु वो सकारात्मक सोचते तो है। ऐसा मैं अपने निजी जीवन के अनुभव से बता रही हूं। जबकि मेरे बच्चे अभी मात्र 17 और 13 वर्ष के हैं। परंतु मैं छोटी-छोटी परेशानियों से जल्दी हताश हो जाती हूं पर तभी यदि बच्चों से बात करूं तो उनकी उंगली पर मेरी समस्याओं का हल है। चाहे बहुत व्यावहारिक नहीं पर मन में नयी उमंग दे जाता है कि मैं छोटी समस्या को शायद बहुत विस्तृत में देख रही हूं।

अन्त में मैं इसी निष्कर्ष पर पहुंचती हूं कि वैचारिक मतभेद पीढ़ी की गैप के कारण चाहे जितने भी हो जरूरत है प्रत्येक पीढ़ी को अपनी दूसरी पीढ़ी के चोले को पहनने की या उनके नजरिये को अपनाने की। यदि अपना न पायें, पर उस परिस्थिति में अपने को रखकर स्थिति देखने का प्रयास जरूर करें। क्योंकि कई चीजों का अनुभव आपको स्वयं वक्त ही कराता है। ऐसा आपने अपने साथ भी महसूस किया होगा। आपके अभिभावकों ने भी आपको बहुत बातें सिखाई होंगी परंतु इसका ठीक अनुभव आपको वक्त ने ही कराया होगा और यही आगे भी होगा। प्रत्येक परिस्थिति को बच्चे को अपने नजरिये से ही महसूस कराने का दबाव बनाना सदा ही आवश्यक नहीं है। कुछ चीजों का अनुभव वो स्वयं लेंगे और लेते भी होंगे। ये भी आपने महसूस किया होगा कि बच्चों ने किसी उम्र में किसी चीज को कठोरता से मना किया हो और बाद में आपको बताया हो कि आप ठीक थी। वक्त से बड़ी कोई शिक्षा नहीं कुछ अनुभव उन्हें अपने दम पर भी लेने दें। यकीन मानिए आज वो जितने दावे करें कि वो अपनी अगली पीढ़ी के साथ आपकी तरह बर्ताव नहीं करेंगे परंतु अभिभावक बनने पर वो भी कुछ न कुछ जरूर बदलेंगे और यही परिवर्तन या वैचारिक मतभेद उन्हें भी अपने जीवन में महसूस करने पड़ेगें क्योंकि ये वैचारिक मतभेद तो समय की परिपाटी के साथ प्रत्येक के जीवन में आना सामान्य है। जरूरत है समय आने पर प्रत्येक को उचित व्यवहार व समझौते करने की जिससे वैचारिक मतभेद का नकारात्मक प्रभाव हर किसी के जीवन में कम से कम पड़े। □

आधुनिक भारत में हिंदी का अस्तित्व



—स्वर्णिमा बाजपेयी,
अधीक्षक सर्वेक्षक

प.बं.एवं सिविकम जी०डी०सी०कोलकाता ।

संस्कृत और प्राकृत के बाद
हिंदी ने जगह बनायी थी,
सरल भाव होने के कारण,
जन-जन ने अपनायी थी,
ब्यौहर जैसी प्रतिभाओं ने,
जब आवाज उठायी थी,
हिंदी बनी राजभाषा, तब
संविधान में आयी थी ।

एक समय था हिंदी का,
जब हर ओर थी हिंदी की झॉकी,
'हिंदी है हम' था सम्मानित,
कदर बहुत थी भाषा की,
अब हिंदी हमसे रूठ गयी है,
करने लगी है चालाकी,
शहर तो सारे छोड़ दिए, बस
घर-गाँव छोड़ना है बाकी ।

ऐसा इंग्लिश का भंवर उठा,
कि सब उस फंदे में झूल गए,
इंग्लिश जिसने जानी वो,
गर्व के मारे फूल गए,
विद्यालय हमने त्याग दिया अब,
इंग्लिश मीडियम स्कूल गए,
अंग्रेजी पढ़ना तो सीख लिया,
पर अफसोस, अपनी हिंदी ही भूल गए ।

यस नो, यस नो कहते सब,
बड़ा आधुनिक ज़माना लगता है,
भारत में आधुनिकता का,
भाषा ही पैमाना लगता है,
ये देश अपना होकर भी,
अब क्यों अंजाना लगता है,
शायद, Good morning कहने लगे हैं लोग,
नमस्कार पुराना लगता है ।
और Thank you कहने लगे हैं लोग,
धन्यवाद पुराना लगता है ।

बोलचाल की हिंदी में भी,
अंग्रेजी भाषा संचार में है,
हिंदी बन गयी है हिंगलिश,
अब तैर रही मंझधार में है,
अस्तित्व बचा लो हिंदी का,
कहीं पीछे खड़ी कतार में है,
अन्यथा, स्थिति देख के लगता है,
साहित्यिक हिंदी विलुप्तता की कगार में है ।



संस्मरण



इकरार अहमद
प्रबंधक (कनिष्ठ)
दक्षिण मुद्रण वर्ग।

बात नब्बे के दशक की है एक बार मुझे एक दोस्त की शादी समारोह में बोकारो स्टील प्लांट जाने का अवसर प्राप्त हुआ। उन दिनों ट्रेनों में सीट का रिजर्वेशन सम्पन्न वर्ग लोग की करवाते थे जो मैन्युवल हुआ करता था, इसलिए ज्यादातर यात्री बिना आरक्षण के ही सफर करते थे।

हम चार दोस्त भी बिना आरक्षित सीट के ही गोरखपुर से मौर्या एक्सप्रेस ट्रेन से सुबह 8:00 बजे सवार होकर अपने गंतव्य के लिए रवाना हो गये। ट्रेन चल पड़ी, ट्रेन वैसे ही एक्सप्रेस थी, फिर भी लगभग हर स्टेशन पर रुकती हुई आगे को बढ़ रही थी। दिन भर-रात भर, फिर अगले दिन शाम चार बजे लम्बी यात्रा पूरी कर हम लोग बोकारो रेलवे स्टेशन पर पहुँचे, वहाँ कुछ लोग आगवानी (लेने के लिए) के लिए पहले ही मौजूद थे।

स्टेशन से फ्रेश होकर बारात घर पहुँचे ही थे कि रस्म अदायगी के लिए लड़की वालों की तरफ से कुछ लोग थाल में सजाकर कुछ कपड़े, मेवा, सेहरा इत्यादि लेकर आये और मुझे संबोधित करते हुए कहा कि बेटा जल्दी से कपड़े पहनकर तैयार हो जाओ, काजी निकाह के लिए पहुँचने ही वाले हैं। मैं आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि शादी तो हम चार दोस्तों में से ही एक दोस्त की थी, फिर लड़की वालों ने दुल्हे की बजाय मुझे कपड़े पहनकर तैयार होने के लिए क्यों कहा ?

मैंने दूल्हे राजा से पूछा भाई क्या माजरा है शादी तुम्हारी है और सेहरा किसी और को बांधने के लिए कहा जा रहा है। भाई तुम कपड़ा पहनो वरना अनायास ही मैं बली का बकरा बन जाऊंगा। लोग मुझे ही दूल्हा समझ रहे हैं। तब दूल्हे राजा ने स्पष्ट किया कि दरअसल कुछ दिन पहले ही मैं दुल्हन (लड़की) देखने यहाँ आया था तब ये सभी लोग वहाँ मौजूद थे लड़की के पिता के आलावा अन्य सभी यह जानते थे कि यह दूल्हे का बड़ा भाई है और लड़की देखकर रिश्ता फाईनल करने आया है। इसीलिए यह गलतफहमी हो रही है।

रस्मो रिवाज के साथ निकाह सम्पन्न हुआ। रात गुजरी और फिर सुबह वही प्रक्रिया बोकारो स्टेशन से गोरखपुर की वापसी शुरू हुई। दूल्हा दुल्हन को फर्स्ट क्लास में दो सीटें आरक्षित करवायी गई थी बाकी के हम तीन दोस्त जनरल डिब्बे में सवार हुए। ट्रेन में बहुत भीड़ हुई। रात ग्यारह बजे के आस-पास डिब्बे में शोर होने लगा कि मेरी जेब कट गई, मेरी जेब कट गई लेकिन भीड़ की वजह से पता ही नहीं चला कि किसकी जेब कटी।

सुबह थोड़ी भीड़ कम हुई लोग सीटों पर बैठकर बातचीत में मशरूफ थे इसी बीच मैंने पूछ लिया कि इस ट्रेन में हमेशा ही भीड़ होती है तो ज्ञात हुआ कि हां रात बारह बजे तक ही भीड़ होती है क्योंकि लोकल

(कम दूरी के यात्री) लोग चढ़ते उतरते हैं। तब मैंने रात वाली घटना का जिक्र किया कि जेबकतरों ने कई लोगों की जेबें काट ली, बड़ा शोरगुल हो रहा था।

सामने सीट पर एक सज्जन व्यक्ति हाथ में छोटा ब्रीफकेस लेकर बैठे थे उन्होंने कहा हां मेरी जेब भी कट गई है मैं बड़ा परेशान हूँ कि किस तरह घर पहुंचुंगा मेरे पास पैसे नहीं है। मैंने उन से पूछा कि क्या आपने नाश्ता वगैरह किया है। बड़े उदास मन से जवाब दिया कि जेब में पैसे नहीं हैं तो कैसे करता, तब मैंने उन्हें नाश्ता कराया और पूछा कितने पैसे में घर पहुंच जायेगे। उस सख्ख ने बोला बीस रूपये में मैं घर पहुंच जाऊंगा मैंने आश्वस्त करते हुए कहा कि आराम से बैठिये, आपको घर जाने में मैं मदद करूंगा।

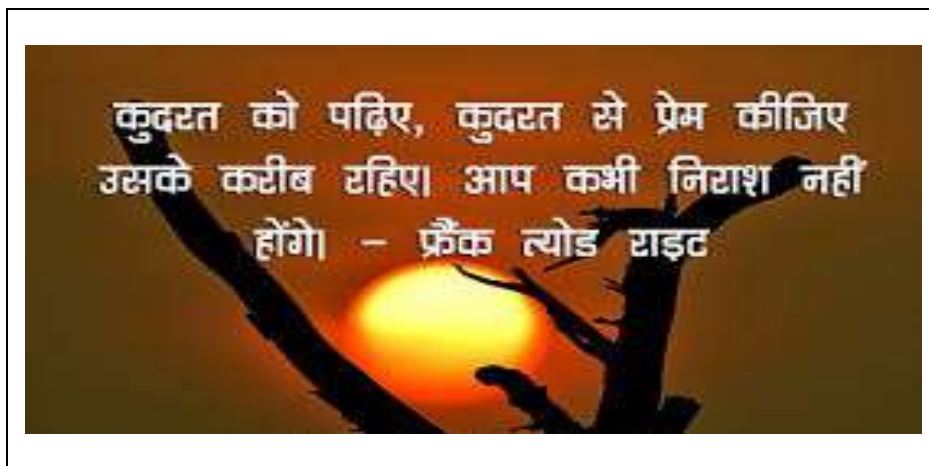
बीस रूपये भी उन दिनों बड़ी रकम होती थी। अतः पैसे देने की बात सुनते ही मेरे साथी ने यह कहते हुए नकार दिया कि यह लोग इसी तरह ट्रेनों में लोगों से उगाही करते हैं बहाना बनाकर पैसे मांगते हैं यह इनका रोज का काम है। मुझे अपने दोस्त की बात अच्छी नहीं लगी मैंने कहा कि तुम्हें जरूरतमन्द की पहचान नहीं है।

पता नहीं क्यों मुझे एहसास हो रहा था कि वह व्यक्ति सच बोल रहा है और जरूरत मंद भी हैं। इसी लिए दोस्त के लाख मना करने के बाद भी मैंने उस व्यक्ति को बीस रूपये दे दिया मेरा शुक्रिया अदा करते हुए वह अपने स्टेशन पर उतर गया।

यात्रा सम्पन्न होने पर हमलोग अपने अपने घर पहुंचे दो दिन गुजारने के बाद मैं वापस दिल्ली आ गया। लगभग तीन महीने बाद एक दिन डाकिया मेरे आफिस में आकर बोला आपका मनीआर्डर आया है। हैरान होकर मैंने डाकिया से पूछा कि मुझे कौन मनीआर्डर किया है। मैं तो नौकरी में हूँ भला मुझे किसी के मनीआर्डर या रूपयों की क्या जरूरत है।

खैर मनीआर्डर फार्म के मैसेज/संदेश वाली जगह पर अपना परिचय देते हुए धन्यवाद किया गया था कि ट्रेन में बीस रूपये देकर आपने जो मेरी मदद की थी उसका मैं सदैव ऋणी रहूंगा। बीस रूपये वापस भेज रहा हूँ इसे स्वीकार करें।

उस सज्जन व्यक्ति ने बातों-बातों में कब मेरा विजिटिंग कार्ड मांग लिया था मुझे याद नहीं। मनीआर्डर देखकर ट्रेन की यात्रा वृतांत याद आया और सोचने लगा कि यदि मैं अपने दोस्त की बात मानकर उस व्यक्ति की मदद नहीं करता तो मुझसे कितना बड़ा अनर्थ हो जाता। अंजाने में ही सही एक ऐसा नेक कार्य कर दिया था जिसकी गुदगुदाहट आज भी मन में रह रह कर होती है। यह एक सामान्य घटना थी जो कि मेरे साथ भी हो सकती थी। मुसीबत में एक – दूसरे के काम आना ही सच्ची मानवता है। □



संस्कार



महेश कुमार नेगी
सीनियर रिप्रोग्राफर

मानचित्र प्रकाशन निदेशालय।

बड़े बाबू के केबिन से निकलकर सीट पर बैठा ही था कि बाहर चौक पर हो रहे कोलाहल ने मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया। चौक पर कार्यरत सिपाही लधुशंका निवारण हेतु गया था तभी ट्रैफिक सिग्नल के चालू रहते भी अव्यवस्था फैल गई, सभी वाहन चालक नियम कानून ताक पर रख अपने रास्ते भागने लगे, इस कारण एक मोटर चालक की मोटर साइकिल चालक से टक्कर हो गई और झगड़ा होने लगा। सभी लोग नियम कानून से चले तो ऐसा कभी न हो।

‘ रामप्रसाद जी नहीं रहे ’ सुनकर पीछे मुड़ा, तो साथी बाबू बता रहे थे, ‘ रामप्रसाद जी नहीं रहे ’ एक गहरी निःश्वास लेकर मैं कुर्सी पर धम से बैठ गया। मन अत्यन्त ही अशान्त और विषाद से भर गया। रामप्रसाद जी का पूरा जीवन वृत्तान्त चलचित्र के समान मेरी आंखों के समक्ष घटित होने लगा।

रामप्रसाद जी के पिता श्री शिवप्रसाद जी संस्कृत एवं ज्योतिष विद्या के प्रकाण्ड विद्वान थे। रामप्रसाद जी उनकी तीन संतानों में सबसे छोटे थे। धीरे-धीरे वयस्क होते हुए उन्हें परिवार के सभी सुसंस्कार मिले, परन्तु अपनी पिता जी की विद्वता छू भी नहीं पाई थी और वे आठवीं कक्षा के बोर्ड में उत्तीर्ण न हो पाये। दो वर्ष पश्चात उन्हें मामा के साथ नगर आने का अवसर मिला और मामाजी ने उन्हें विद्युत विभाग में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के रूप में नियुक्त करा दिया।

समय व्यतीत होता गया और कुछ वर्ष पश्चात रामप्रसाद जी के मामा जी ने उनके लिए एक लड़की पसन्द की और रामप्रसाद जी का विवाह सम्पन्न हो गया। एक वर्ष पश्चात रामप्रसाद जी के घर पर पुत्र रत्न का जन्म हुआ। परन्तु पुत्र को जन्म देते समय ही उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया। रामप्रसाद जी पर तो मानो वज्रपात ही हो गया था। सम्बन्धियों एवं मित्रों के बहुत आग्रह करने पर कि वह पुनः विवाह कर लें किन्तु रामप्रसाद जी ने विवाह न करने का निर्णय लिया और अपने पुत्र का स्वयं ही पालन पोषण करने का निश्चय किया।

राम प्रसाद जी का पुत्र अत्यन्त ही प्रखर बुद्धि का था। स्नातक में स्वर्ण पदक प्राप्त करने के पश्चात वह भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हेतु परीक्षा में बैठा और प्रथम प्रयास में ही उसका चयन हो गया। उस दिन रामप्रसाद जी खुशी से पगला से गए थे, पूरे कार्यालय का उन्होंने मुंह मीठा कराया था सबने रामप्रसाद जी को बधाई दी थी।

समय बीतता गया और रामप्रसाद जी के पुत्र का अपनी एक सह प्रशासनिक सेवारत युवती से प्रेम हो गया और वह उससे विवाह करने के लिए अपने पिताजी से सहमति चाहता था। इस विवाह में गतिरोध इस बात का था कि वह युवती दूसरे धर्म की थी और रामप्रसाद जी नहीं चाहते थे कि यह विवाह हो परन्तु मित्रों व सम्बन्धियों के कहने पर और पुत्रमोह में वो अनमन होकर विवाह हेतु मान गये थे। धूमधाम से विवाह हुआ।

एक माह पश्चात जब रामप्रसाद जी कार्यालय आए तो सबने यह बात देखी कि वे कुछ अधिक ही थूकने लगे थे और कुछ खा-पी नहीं रहे थे। बहुत पूछने पर उन्होंने बताया कि विवाह के पश्चात बेटा-बहू घूमने चले गये। जब लौट कर आए तो बहू ने कहा कि आज मैं खाना बना कर सबको खिलाऊंगी। रामप्रसाद जी बहुत प्रसन्न थे कि चलो अब बहू के हाथ का खाना खायेंगे। बहू ने खाना बनाया और वे सब खाना खाने हेतु बैठे, पहला कौर मुंह में डालते ही रामप्रसाद जी को जोर से उबकाई आयी वे पूछने लगे कि ये क्या बनाया है तो बेटा बोला पिताजी ये गाय का मांस है। इतना सुनकर ही रामप्रसाद जी मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़े। तब से जब भी वे कुछ भी खाने पीने का प्रयास करते तो उनका जी मिचलाने लगता था और वे थूकने का उपक्रम करने लगते। एक सप्ताह के बाद ही रामप्रसाद जी चिकित्सालय में भर्ती हो गये थे। बिना खाये पीये उनका स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया और आत्मग्लानि व निराशा में उन्हें जीवन जीना ही निरर्थक लगने लगा था। आज यह समाचार सुनकर अत्यन्त शोक हुआ और उनकी अंत्येष्टि में जाने का निश्चय किया।

बाहर चौक में ट्रैफिक पुलिस वाला आ गया था और वाहन संचालन सुचारु रूप से चलने लगा था । □

गज़ल



— डॉ० नीलम कुमार बिड़ला

अभिलेखपाल ग्रेड 1

आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना जी०डी०सी०

कोई हँस के हँसा के टूट गया,
कोई आँसू बहा के टूट गया ।

मैं तो टूटा था उसकी चाहत में,
वो मुझे आजमा के टूट गया ।

दिल की किस्मत भी क्या किस्मत थी ,
जो तेरा गम उठा के टूट गया ।

इतने चेहरे थे उस के चेहरे पर,
आईना तंग आके टूट गया ।

नींद ख्वाबों के डर से टूट गई,
ख्वाब 'नीलम' की पलकों में आके टूट गया । ●

वृद्ध वृक्ष

— मकबूल जान

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

दक्षिणी जोन, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, बेंगलुरु।



क्या हसीन हस्ती थी क्या जमाना था
इस वृक्ष का भी एक रंगीन फसाना था ।
नन्हा सा कोंपल हावों में मचलता था
मखमली लाल पत्तों से लहलहाता था ।
फूल—फल से लदी लचीली शाखों पर
हसीन तितलियों परिंदों का बसेरा था ।

कितने मौसम व सावन गए और आए
साए में मेरे ना जाने कितने सुकून पाए ।
दिया फूल फल छाया लिया कुछ भी नहीं
आज तन्हाई के सिवा पास कुछ भी नहीं ।
अब बूढ़ा हो चला हूँ तो बोझ लगता हूँ
अपने आप से पशेमान बड़ा लगता हूँ ।
काटने पे तुला है तो जलाने पे कोई
दूढ़ते हैं सब बहाने हाथ छुड़ाने के कई ।
बुजुर्गों तुम्हारी हमारी एक ही है कहानी
हम दोनों की कदर किसी ने ना जानी ।

तिनका—तिनका चुन कर थे घर बसाए
बे—आबरू से उसी से बाहर निकाले गए ।
अपनों ने अपने हाथ जब छुड़ा लिए
वृद्धाश्रम में औरों ने दामन थाम लिए ।
कौन कब तक किसी का साथ देता है
वक्त का पहरा सभी को कभी छूता है ।
जीवन सत्य का नैसर्गिक न्याय है यही
आज हम तो कल तुम भी होंगे वही ।



‘रेकी’ एक परिचय



महेश कुमार नेगी
सीनियर रिप्रोग्राफर

मानचित्र प्रकाशन निदेशालय।

‘रेकी’ सर्वव्यापी, सार्वभौमिक जीवन शक्ति लिए प्रयुक्त जापानी शब्द है। ‘रे’ का अर्थ है सार्वभौमिक अथवा ब्रह्माण्डीय तथा ‘की’ का अर्थ है जीवन शक्ति ऊर्जा। यह ऊर्जा सभी प्राणियों तथा वनस्पति में निवास करती है तथा व्यक्ति के स्वस्थ जीवन का मूलाधार है।

‘रेकी’ एक मूल ऊर्जा शक्ति है जिसमें ब्रह्माण्ड बना है इसलिए यह सर्वद्व है, सर्वव्यापी है। यह एक असीमित प्रेम ऊर्जा है जो प्रत्येक प्राणी में प्रेम व कल्याण की भावना से रहती है। यह शरीर, मन एवं आत्मा को एक करती है। यह एक आध्यात्मिक शक्ति है जिसका प्रयोग शरीर में स्थित ऊर्जा चक्रों की गति व दिशा में उत्पन्न असंतुलन से सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य लाभ होता है। इसीलिए वर्तमान में रेकी को एक वैकल्पिक, स्पर्श उपचार पद्धति के रूप में जाना जाता है।

‘रेकी’ एक सरल उपचार पद्धति ही नहीं है, यह इस ऊर्जा को ग्रहण करने का एक प्रभावशाली उपाय भी है। कोई व्यक्ति जब एक बार रेकी माध्यम (चैनल) बन जाता है उसमें रेकी ऊर्जा का प्रभाव आजीवन रहता है।

‘रेकी’ कोई धर्म नहीं है। सभी धर्म तथा विचारधारा के अनुयायी इसका प्रयोग सफलता से कर सकते हैं। सिद्ध रेकी गुरु शक्तिपात प्रक्रिया द्वारा प्रशिक्षु में असीम ऊर्जा का प्रवाह करते हैं जिससे उसका सम्बन्ध स्वयं ही ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से जुड़ जाता है और वह अल्पावधि में ही स्वयं तथा अन्य व्यक्तियों के उपचार में सक्षम हो जाता है।

‘रेकी’ उपचारक, उपचार में ऊर्जा का एक माध्यम मात्र होता है क्योंकि जब वह उपचार के लिए अपने हाथ किसी पर रखता है तो केवल उसकी सीमित ऊर्जा ही नहीं प्रवाहित होती, अपितु एक असीमित ब्रह्मांडीय ऊर्जा प्रवाहित होती है जो उसे भी अधिक ऊर्जावान बनाती है।

कोई भी रोग अपने अन्तः शरीर के असंतुलन का भौतिक रूप हैं। रेकी अन्तः शरीर को संतुलित कर भौतिक शरीर को रोगमुक्त करती है। मनोदशा तथा शरीर का गहरा सम्बन्ध है। शरीर के रोग का उपचार करने से मनोदशा में भी उपचार हो जाता है और मनोदशा के उपचार से शरीर के रोग दूर हो जाते हैं। ‘रेकी’ शारीरिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक स्तर पर कार्य करती है। यह किसी भी समय, किसी भी दूरी तक कार्य करती है, किसी भी उपचार क्रिया को शीघ्र पूरा करती है, शरीर को शान्त व स्फूर्तिवान बनाती है, ऊर्जा चक्रों को संतुलित करती है, शरीर की जीवन क्षमता बढ़ाती है, पुराने उग्र भावों को दूर कर मन में शान्ति, सुख व सुरक्षा की भावना भर देती है, शरीर की नकारात्मकता दूर करती है। यह प्रज्ञा बुद्धि को जागृत कर नये-नये विचार उत्पन्न करती है। रेकी आत्मविश्वास में वृद्धि करती है तथा कठिन परिस्थितियों में भी शान्ति, विश्वास एवं दृढ़ता बनाये रखती है। नकारात्मक

विचार यथा क्रोध, ईर्ष्या, असंतोष, डिप्रेशन या अवसाद दूर हो जाते हैं जिससे व्यक्ति असीम शान्ति अनुभव करता है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में तन, मन व आत्मा की शुद्धि के लिए रेकी एक सरल मार्ग है, जो व्यक्ति को अधिक ऊर्जावान, सुसंस्कृत तथा सामर्थ्यवान बनाती है। इसके प्रयोग से समाज व संसार भी सुन्दर, सुखद, प्रेममय, कल्याणमय एवं शान्तिपूर्ण बन सकता है। □



☺ हंसी की छोटी-छोटी बातें 🎆

प्रदीप कुमार वर्मा

निजी सचिव

विशिष्ट क्षेत्र, भारतीय सर्वेक्षण विभाग

टीचर : अगर रात में मच्छर काटे तो क्या करना चाहिए?

लड़का : चुपचाप खुजाकर सो जाना चाहिए। क्योंकि आप रजनीकांत तो हो नहीं जो मच्छर से सॉरी बुलवा लोगे। ☺

भारत इकलौता ऐसा देश है जहाँ बारिश इंच या सेंटीमीटर के बजाए इस बात से नापी जाती है कि गली की नाली भरी या नहीं। ☺

एक पति ने अपने गुरु से पूछा – स्वामी जी, पिछले कुछ समय से एक चमत्कारिक घटना घट रही है।

आधी रात को जब मेरी नींद खुलती है, तो देखता हूँ कि मेरी पत्नी सिर तक चादर से ढक कर सोई रहती है और एक प्रकाश पुंज उसके सिर के पास फैला रहता है।

क्या मेरी पत्नी के पास कोई दैवीय शक्ति है ? गुरु जी – बेटा अपनी बुद्धि लगाओ, तुम्हारी पत्नी चादर के अंदर तुम्हारा मोबाइल चेक कर रही होगी।

दैवीय शक्ति के चक्कर में ना पड़कर, जल्दी से अपने मोबाइल का पासवर्ड बदल दो नहीं, तो भविष्य में तलाक के योग बन जाएंगे। ☺

परीक्षा में एक छात्र कॉपी पर फूल बना रहा था।

टीचर – यह क्या कर रहे हो? फूल क्यों बना रहे हो?

छात्र – सर, यह फूल मेरी याद्दाश्त को समर्पित है, जो अभी-अभी गुजर गई। ☺



आदर्श भारतीय का जीवन—सूत्र



संकलक : एम. रामकृष्णा,
यंत्र यांत्रिक (उच्च कुशल),
दक्षिण मुद्रण वर्ग, हैदराबाद ।

1. मैं मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व ब्रह्म एवं ब्रह्माण्ड से है व उसी के लिये है। भागवत सत्ता व सम्पूर्ण अस्तित्व के प्रति मैं सदा कृतज्ञता का भाव रखूंगा। मेरी आत्मा में परमात्मा प्रतिपल जो भी प्रेरणा, संदेश, निर्देश व आज्ञा दे रहा है, उसे ईश्वर का आदेश मानकर ईश्वरीय योजना के तहत भागवत् कर्म करना, यही मेरा धर्म व जीवन का ध्येय है। मैं और मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व समाज, राष्ट्र, लोककल्याण व भगवान के लिये है।
2. मैं एक व्यक्ति नहीं, मैं सम्पूर्ण राष्ट्र की अभिव्यक्ति हूँ। मैं संकीर्ण नहीं, विराट हूँ। मैं परमात्मा का प्रतिरूप हूँ। मैं सत्य, अहिंसा व सदाचार का प्रतिनिधि हूँ। मेरे तन में, मेरा वतन बसता है। मैं भारत की तकदीर व तस्वीर हूँ। मैं अपना व अपने वतन का भाग्य विधाता हूँ।
3. कर्म ही मेरा धर्म है। कर्म ही मेरी पूजा है। कर्म ही जीवन व जगत का सत्य है। निष्काम कर्म, कर्म का अभाव नहीं, कर्तव्य के अहंकार का अभाव होता है।
4. राष्ट्र – धर्म सबसे बड़ा धर्म है। राष्ट्रदेव सबसे बड़ा देवता व राष्ट्रप्रेम सबसे उत्कृष्ट कोटि का प्रेम है। राष्ट्रहित सर्वोपरि है। राष्ट्र मेरा सर्वस्व है। इदं राष्ट्रस्य इदन्न मम। मेरा तन – मन – धन व जीवन राष्ट्रहित में समर्पित रहेगा।
5. मेरा एक दिन एक जिन्दगी के बराबर है तथा एक क्षण एक दिन के बराबर है। अतः एक – एक दिन को मैं एक जिन्दगी की तरह पूरे उत्साह से जीऊंगा, एक क्षण के लिये भी निराश नहीं होऊंगा। ये दिन ये ही जिन्दगी का आखिरी दिन है ऐसे एक-एक दिन को जीऊंगा।
6. सब मनुष्यों को भगवान ने प्रथम होने की शक्ति व सामर्थ्य दिया है। मैं अपने जीवन में अपने क्षेत्र में विश्व का प्रथम व्यक्ति – एक आदर्श (आइकॉन) बनने हेतु प्रतिपल संघर्ष करूंगा। बड़ी सोच, कड़ी मेहनत व पक्का इरादा के साथ " चरैवेति चरैवेति " के सिद्धान्त पर चलकर भगवान् के अनुग्रह माता-पिता व गुरुसत्ता के आशीष, ईमानदारी से कठोर मेहनत, सही निर्णय व सबको श्रेय व सम्मान देता हुआ मैं एक दिन सफलता के शिखर पर अवश्य पहुँचूंगा।
7. मैं 24 घंटे अपने ध्येय लक्ष्य (अल्टीमेट गोल-टार्गेट) को अपने सामने रखकर जीऊंगा, एक क्षण के लिये भी स्वयं को निम्न चेतना में नहीं जाने दूंगा, सदा उच्च चेतना, दिव्य चेतना, सहज योग, सहज समाधि, जीवन मुक्ति या विदेह भाव की अवस्था में रहूंगा व प्रतिपल " शिवोऽहम् शिवोऽहम् " का अनुभव करूंगा।
8. मैं आत्मा, परमात्मा व राष्ट्र की शक्ति को पूर्ण विवेक व प्रामाणिकता के साथ समझकर उसका सौ प्रतिशत सही उपयोग करूंगा। सब स्वरूपों में ब्रह्म स्वरूप का दर्शन एवं सब

सम्बन्धों में ब्रह्म सम्बन्ध की अनुभूति करता हुआ , जीवन के अन्तिम सत्य , शाश्वत सुख को हर पल अनुभव करता हुआ गुरु, भगवान व राष्ट्र को केंद्र में रखकर जीऊंगा।

9. प्रणव के जप व प्राणायाम के तप से सब जप , तप , शक्ति व सिद्धियों को प्राप्त कर शरीर, इन्द्रियों एवं मन पर विजय प्राप्त कर पिण्ड व ब्रह्माण्ड-गत-समस्त शक्तियों के साथ तादात्म्य अनुभव करूंगा।
10. ज्ञान, कर्म व भक्ति की पराकाष्ठा में जीता हुआ, मैं परा व अपरा विद्याओं को प्राप्त करूंगा तथा जीवन व जगत् में भगवान का साम्राज्य स्थापित करूंगा। "स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानवः"। □

कब हम जीना भूल गए



विकास शर्मा
एम0टी0एस0
महासर्वेक्षक का कार्यालय।

किस अथक अन्वेषणों की राह पकड़े
सरसरे अगणित पलों की बांह पकड़े
हर दिशा में ही दशा के अनुकूल गए
कब हम जीना भूल गए ।

टोहती हैं राह भी अब राह सबकी
वक्त लेता है तेरे हिस्से की झपकी
टूटते तारे परस्पर पूछते हैं
क्या नहीं इच्छाओं से अब झूझते हैं
सुख दुख के निर्मित उलझे सांटो में झूल गए
कब हम जीना भूल गए ।

अब कहानी भी सयानी हो गई है
चांद सूरज की रवानी खो गई है
रस नहीं बाकी कोई नीरस सुबह में
घोर सन्नाटे हैं क्यों चंचल हृदय में
व्यर्थ ही जीवन की शाखों से फूल गए
कब हम जीना भूल गए ।



एकादशी— “पुण्य कर्म”



प्रवेश कुमार वर्मा

वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

मानचित्र प्रकाशन निदेशालय।

एकादशी से अगले दिन एक भिखारी एक सज्जन की दुकान पर भीख मांगने पहुंचा। सज्जन व्यक्ति ने एक रूपये का सिक्का निकाल कर उसे दे दिया। भिखारी को प्यास लगी थी। वो बोला, बाबू जी एक गिलास पानी भी पिलवा दो, गला सूखा जा रहा है। सज्जन व्यक्ति गुस्से में बोला— तुम्हारे बाप के नौकर बैठे हैं क्या हम यंहा? पहले पैसे, अब पानी, थोड़ी देर में रोटी मांगेगा, चल भाग यहाँ से।

भिखारी बोला:— बाबू जी गुस्सा मत कीजिए, मैं आगे कहीं पानी पी लूँगा। पर जहाँ तक मुझे याद है, कल इसी दुकान के बाहर मीठे पानी की छबील लगी थी और आप स्वयं लोगों को रोक-रोक कर जबरदस्ती अपने हाथों से गिलास पकड़ा रहे थे। मुझे भी कल आपके हाथों से दो गिलास शरबत पीने को मिला था। मैंने तो यही सोचा था कि आप बड़े धर्मात्मा आदमी हैं, पर आज मेरा भ्रम टूट गया। कल की छबील तो शायद आपने लोगों को दिखाने के लिए लगाई थी।

मुझे आज आपने कडवे वचन बोल कर अपने कल का सारा पुण्य खो दिया। मुझे माफ करना अगर मैं कुछ ज्यादा बोल चुका हूँ तो।

सज्जन व्यक्ति को बात दिल पर लगी, उसकी नजरों के सामने बीते दिन का प्रत्येक दृश्य घूम गया। उसे अपनी गलती का अहसास हो रहा था। वह स्वयं अपनी गद्दी से उठा और अपने हाथों से गिलास में पानी भरकर उस बाबा को देते हुए उससे क्षमा प्रार्थना करने लगा।

भिखारी बोला बाबू जी, मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं, परन्तु अगर मानवता को अपने मन की गहराईयों में नहीं बसा सकते तो एक दो दिन किये हुए पुण्य व्यर्थ हैं।

मानवता का मतलब तो हमेशा शालीनता से मानव व जीव की सेवा करना है। आपको अपनी गलती का एहसास हुआ, ये आपके व आपकी संतान के लिए अच्छी बात है।

आप और आपका परिवार हमेशा स्वस्थ व दीर्घायु बना रहे, ऐसी मैं कामना करता हूँ। यह कहते हुए भिखारी आगे बढ़ गया।

सेठ ने तुरंत अपने बेटे को आदेश देते हुए कहा:— कल से दो घड़े पानी दुकान के आगे आने- जाने वालों के लिए जरूर रखे हों।

उसे अपने गलती सुधारने पर बड़ी खुशी हो रही थी। सिर्फ दिखावे के लिए किये गए पुण्य कर्म निष्फल हैं। सदा हर प्राणी के लिए अपने मन में शुभ कामना—शुभ भावना हो, यही सच्चा पुण्य है।



मजदूर का बेटा मजदूर

— शान्ति प्रकाश 'जिज्ञासु'
पेन्टर

महासर्वेक्षक का कार्यालय।



मजदूर किशन के बेटे ने इस दुनिया में आकर जब आंखें खोली तो काली तिरपाल के आवरण से ढकी एक झुग्गी थी। जिसका प्रवेश द्वार उसकी मां की पुरानी धोती व कुछ लकड़ी की डंडियों को सुतली तो कहीं तार से बांध कर बनाया गया था। दिन में काम पर जाते समय व रात को सोने से पहले इसी से झुग्गी को ढक लिया जाता था। जब बेटे का नामकरण हुआ तो नाम सचिन रखा गया। यद्यपि अंधविश्वास ही सही किन्तु मां को मालूम था कि चर्चित नाम रखने से बच्चे के अन्दर जथो नाम तथो गुण वाले भाव आ जाते हैं। दूसरा उसने सुना था कि बच्चे की नाल काट कर कहीं अच्छे स्थान पर रखनी या फेंकनी चाहिए। नाल को यदि किसी स्कूल-कॉलेज की छत या उस ओर फेंकने से भी बच्चा लगन से शिक्षा ग्रहण करता है। उसे यह भी मालूम था कि मजदूर का बेटा मजदूर ही तो बनेगा। अगर शिक्षित हो भी जाएगा तो उसे नौकरी कौन देगा। फिर उस ओर क्या सोचना। जो संभव ही नहीं है। मां-पिता जब काम पर जाते तो सचिन को साथ ले जाते थे। उसे वहीं रेत, बजरी, ईट के ढेर के पास टाट बिछा कर बैठा दिया जाता था। नींद आती तो वह सो जाता। भूख लगती तो रोने लगता। उसके रोने की आवाज सुनकर मां दूध पिलाने आती। यदि मुंशी को बिना पूछे बच्चे को दूध पिलाने लगती तो मुंशी उसे डांट लगाता था। यदि पूछ कर भी जाती और थोड़ी देर हो जाती तो भी मुंशी डांट लगाता। चार बातें सुनाता था। कुछ दिनों के बाद मां, मुंशी के ताने सुनने की आदि हो गई थी। कभी कभी तो सचिन रो रोकर पुनः सो जाता था। सचिन समय के साथ-साथ बड़ा होने लगा। वह भी सभी मजदूरों के बच्चों के साथ रेत बजरी में खेलने लगा। शाम होते ही वह भी अपनी मां-पिता की गोद में घर यानि झुग्गी में आ जाता। दो-तीन साल का हुआ तो वह भी अपनी मां-पिता को देख कर ईट, बजरी उठाने की कोशिश करने लगा। छः सात साल का होने पर, वह भी ईंटे ढोने लगा, किन्तु उसे यह काम अच्छा नहीं लगता था। वह बोझ से दबना नहीं चाहता था। क्या करे। उसके हाथ में तो क्या! पिता के हाथ में भी कुछ नहीं था।

शाम को खाना खाने के बाद अक्सर सभी मजदूर अपनी झुग्गी के बाहर बैठ कर गप्प मारते थे। बच्चे खेलने में मस्त रहते थे। गर्मी का मौसम था एक दिन किशन अपनी आप बीती सुना रहा था। "क्या कहें भईया हमारे पिता भी मजदूरी करते थे। हम बहुत छोटे थे। दादा के मरने पर एक बार पिता के साथ गांव गए थे। दुबारा गांव जाने का मौका नहीं मिला। दादी पहले ही स्वर्ग सिधार चुकी थी। दादा के जाने के बाद फिर कोई अवसर ही नहीं मिला। उसके बाद तो पिता ही चले गए" दूसरे मजदूर ने पूछा 'कैसे?' वह बोला 'कोई दसवें माले की बिल्डिंग बनकर तैयार हो चुकी थी। फिनीशिंग चल रही थी। बड़े-बड़े जाल और टान लगे थे। बस एक बल्ली खिसक गई, ऊपर चढ़े हुए दस बारह लोग टान सहित जमीन पर आ गिरे। एक भी मजदूर जिन्दा नहीं बचा। उसी में मेरे पिता भी थे।' सचिन खेल

तो रहा था किन्तु अपने पिता की बात भी ध्यान से सुन रहा था। तब से उसका मन और भी खराब हो गया। सोचता था क्या जिन्दगी भर मैं भी बोझ ढोता रहूंगा। वह रोज अपने मां-पिता के साथ जाता तो था किन्तु खोया-खोया सा रहता था।

एक दिन की बात है। ठेकेदार के साथ उसका एक दोस्त आया हुआ था। उसकी निगाह सचिन पर पड़ी। उसने सचिन को पास बुलाया और उससे पूछा 'तुम्हारा नाम क्या है?' 'सचिन।' 'यहां क्या कर रहे हो?' सचिन बोला 'यहां मेरे माता-पिता मजदूरी करते हैं।' व्यक्ति बोला 'स्कूल जाते हो?' 'नहीं' सचिन बोला। 'क्यों नहीं जाते?' व्यक्ति ने पूछा। सचिन सिर झुका कर खड़ा हो गया। उसने पूछा 'ईंट बजरी उठानी अच्छी लगती है' सचिन बोला 'बिल्कुल नहीं।' 'तुम स्कूल जाना चाहते हो' सचिन चुप हो गया। उसने पूछा 'किताब पढ़ना चाहते हो।' सचिन बोला 'हां' व्यक्ति ने कहा 'जाओ अपने पिता को बुला लाओ।' सचिन अपने पिता को बुलाकर लाया। उस व्यक्ति ने किशन से कहा 'तुम्हारा बेटा होनहार लगता है। यह भविष्य में अच्छा इंसान बनेगा खूब तरक्की करेगा, स्कूल जाना चाहता है। इसे भेजते क्यों नहीं हो?' किशन बोला 'साहब कहता तो है लेकिन कैसे भेजें? कहां भेजें? हम ठहरे अनपढ़। हमें स्कूल के बारे में कोई जानकारी नहीं है साहब। बेटा स्कूल कैसे जाएगा। साल छः महीने में बिल्डिंग पूरी हो जाती है तो फिर दर-दर भटकना पड़ता है।' व्यक्ति बोला 'ठीक है।' किसी बिल्डिंग में साल दो साल भी तो लगते हैं। फिर भी काम तो इसी शहर में करोगे। सुनो बच्चों को स्कूल भेजोगे तो वहां पर दिन का खाना सरकार की ओर से मिलेगा। मैं इसकी कापी किताब, ड्रेस के साथ सारे खर्च की व्यवस्था कर दूंगा। क्या कहते हो?' यह बात सुनकर सचिन खुश हो रहा था। किन्तु चुप था। किशन बोला 'साहब आप ही इस लड़के से पूछ लो।' व्यक्ति ने कहा 'हां भई सचिन, स्कूल जाएगा ना!' सचिन उछल कर बोला 'हां जी।' 'ठीक है। मैं कल आऊंगा और तुम्हें सामने वाले स्कूल में दाखिला दिला दूंगा।' अगले दिन सचिन अपनी मां-पिता से पहले जाग गया। फिर मां को जगाया 'मां उठ मुझे स्कूल के लिए तैयार कर दे। मैं दोस्त के साथ स्कूल जाऊंगा।' मां बोली 'आज सुबह-सुबह तेरा कौन सा दोस्त बन गया जो स्कूल जाने के लिए तैयार भी हो गया।' सचिन बोला 'भूलगई कल तेरे सामने ही तो दोस्त ने कहा था मैं तुझे स्कूल ले जाऊंगा।' 'अरे हां अच्छा ओ ठेकेदारजी का दोस्त' 'हां हां वही' सचिन उत्सुकता से बोला। मां ने कहा 'अरे बेटा सो जा। क्यों मेरी नींद खराब कर रहा है। इतना बड़ा आदमी तेरा दोस्त कैसे हो सकता है। उन्हें 'साहब' बोलना। तेरा कोई दोस्त-वोस्त नहीं आने वाला। ओ तो कल की बात थी। वो अपने जरूरी काम से आए होंगे। ठेकेदार से मिले और गए। तू उन्हें अच्छा लगा, उन्होंने तेरे से बात कर ली, इसका मतलब यह तो नहीं है कि वो आज तेरे लिए अपने सारे काम छोड़ कर आएंगे और तुझे स्कूल में दाखिला दिला देंगे और सुन हम भी तुझे कहां स्कूल भेजने ही वाले हैं। वो तो उन्होंने कहा और हमने उनकी हां में हां मिला ली। वो नहीं आएंगे ! थोड़ी देर तू भी सो जा मुझे भी सोने दे।'

सचिन नहीं माना, उसने कहा 'नहीं मां तू मुझे तैयार कर दे, बस।' उसकी जिद्द के आगे मां को झुकना पड़ा। थोड़ी देर बाद मां ने सचिन को तैयार कर दिया। खाना बना कर खाया

और दिन के लिए टिफिन में भर ही रही थी कि सचिन बोला 'मां जल्दी कर दोस्त आ जाएंगे।' मां बोली अरे बेटा काम पर दस बजे जाना है अभी से क्या करेंगे।' सचिन बोला लेकिन स्कूल तो जल्दी शुरू हो जाता है।' मां सचिन की जिद्द के आगे बेबस थी। उसने सचिन को नहलाया। साफ कपड़े पहनाए बाल-वाल बना कर टीप-टॉप कर दिया। सचिन सुन्दर था इसलिए किसी की भी निगाह उस पर टिक जाती थी। तीनों घर से नौ बजे ही निकल पड़े। ठिकाने पर पहुंचे तो अभी कोई भी मजदूर नहीं आया था। आता भी कैसे। काम शुरू होने का समय तो दस बजे का है। खैर समय बीतता गया मजदूर काम पर आते जा रहे थे। सचिन की बेसब्री बढ़ती जा रही थी।

सचिन की निगाहें चारों ओर तेजी से कुछ खोजती जा रही थी। दस बज चुके थे दोस्त नहीं आया। मां-पिता भी काम करते हुए बार-बार सचिन की ओर देखते जा रहे थे। साढ़े दस बच गए, दोस्त नहीं आया। सचिन चिंतित था किन्तु मन में पूर्ण विश्वास था। उसके साथी खेलने की जिद्द कर रहे थे, सचिन कपड़े गंदे होने के डर से खेल नहीं रहा था। बच्चे पूछ रहे थे तू बन-ठन के कहां जा रहा है। सचिन किसी का उत्तर नहीं दे रहा था। बस तेज गति से इधर-उधर देख रहा था। ग्यारह बजे, दूर से एक कार आती दिखाई दी सचिन के बदन में खुशी की लहर दौड़ गयी क्योंकि यह दोस्त की कार थी।

कार जैसे ही आकर रुकी सचिन दौड़कर कार के पास गया। दोस्त जैसे ही नीचे उतरे सचिन ने नमस्ते किया दोस्त मुस्कुराया। 'सचिन कैसा है। मुझे आने में देर तो नहीं हुई।' दोस्त ने पूछा। सचिन बोला 'ठीक हूं। मैं तो नौ बजे से आपका इंतजार कर रहा हूं।' 'सॉरी दोस्त। देर हो गयी। क्या है मुझे अपनी मैडम को डाक्टर से रूटीन चेकअप कराना होता है। चलो स्कूल चलें।' सचिन ने कहा 'जी'। स्कूल जा कर सचिन का दाखिला हुआ। मैडम ने उसे समझाया 'ध्यान लगा कर पढ़ाई करनी है, रोज नहा कर आना है। कपड़े और नाखून साफ रखने हैं। सभी दोस्तों के साथ भी मिलजुल कर रहना है। शरारत नहीं करनी है। 'ठीक है।' सचिन ने सिर हिलाकर सहमति दी। सचिन थोड़े ही दिन में किताबों में रूचि लेने लगा। टीचर जो भी पढ़ाती थी वह ध्यान से सुनता था। होमवर्क पूरा करके लाता था, और अगले दिन के लिए भी तैयारी कर के आता था। स्कूल जाते हुए सचिन को कुछ ही दिन हुए थे। वह अपनी नई किताबें बस्ते में सलीके से रख रहा था कि उसके पिता ने कहा सचिन 'ये सब क्या है।' सचिन बोला 'पापा ये मेरी नई बुक्स हैं।' किशन तो 'पापा' शब्द सुनकर चौंक गया था। किशन ने सचिन से पूछा 'तूने क्या कहा' सचिन बोला 'पापा'। उसने कहा 'पिताजी को स्कूल के बच्चे पापा कहते हैं।' किशन बहुत खुश हुआ। पढ़ाई का ऐसा असर होता है उसको पता नहीं था।

छुट्टी का दिन था। किशन झुग्गी की तिरपाल ठीक कर रहा था। सचिन बोला 'पापा हम इस झुग्गी में कब तक रहेंगे?' किशन बोला 'क्यों?' यही तो हमारा घर है।' इसके अलावा हम कहां जाएंगे।' सचिन बोला 'पापा क्या हम किराए का घर नहीं ले सकते। इस झुग्गी में सीधा अन्दर नहीं जा सकते। बार-बार बांस पर सिर लगता है। अन्दर खड़े नहीं हो सकते हैं। चारों हाथ पैर टेक कर अंदर-बाहर आना-जाना पड़ता है। आप तो थक कर चूर हो

जाते हो। तूफान में कई बार झुग्गी दूर जा कर, पसर कर गई। मानो वह भी पैर पसार कर आराम करना चाहती हो।

ऐसा भी कई बार हो चुका है कि आप रात थक कर झुग्गी में सोए और सुबह सिर से छत गायब मिली। पक्के कमरे में कम से कम पैर पसार कर सो सकेंगे और सीधे खड़े हो सकेंगे। रोज सुबह शौच के लिए डिब्बा उठा कर, मुंह छुपाकर भी नहीं जाना पड़ेगा। किशन बोला 'बेटा हमें कौन घर देगा। जान-पहचान नहीं है। फिर हम ठहरे दिहाड़ी मजदूर। हमारे पास कभी काम है कभी नहीं, फिर किराया कहां से देंगे। किराया भी दो-तीन हजार से कम तो नहीं होगा।' सचिन बोला 'पापा गर्मियों में झुग्गी कितनी तपने लगती है। बरसात में पानी क्या बाहर क्या अन्दर एक समान हो जाता है। उसने पापा को समझाया आप ठेकेदार से रोज पैसे मत मांगो। आठ दस दिन का पैसा एक साथ मांगोगे तो पैसे ज्यादा मिलेंगे। जिसमें हमारा काफी दिन का राशन आ जाएगा। फिर कुछ दिन के पैसे जमा करेंगे तो किराया भी हो जाएगा।' किशन की समझ में बात तो आ गई किन्तु कई उलझनों ने जन्म ले लिया।

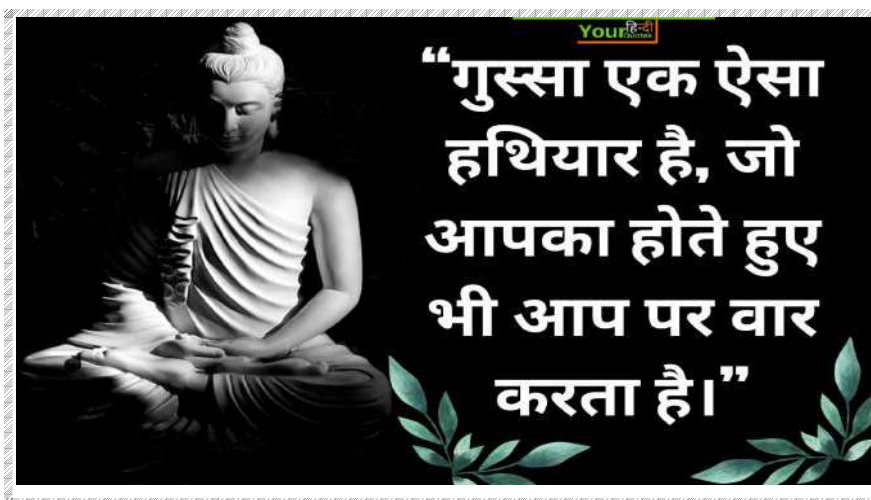
किशन ने सचिन का दिल रखने के लिए एक छोटे से क्वार्टर की व्यवस्था कर दी जिसके आंगन में शौचालय भी है। किशन ने वैसे ही किया कि ठेकेदार से रोज पैसे मांगने बंद कर दिए। अब वह दस बारह दिन में पैसे मांगता और घर का राशन भर देता था फिर किराया का बंदोबस्त करने लगा। इस तरह उसे ठेकेदार के ताने भी नहीं सुनने पड़ते थे। धीरे धीरे सब गतिमान हो गया, व्यवस्था बनती चली गई। सचिन मन लगा कर पढ़ने लगा, अपनी कक्षा में अब्बल आने लगा और कई प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर ईनाम भी लाने लगा। यह देख कर उसके मम्मी -पापा भी खुश रहने लगे। उनके विचारों में भी परिवर्तन आने लगा। सचिन खाली समय में ट्यूशन पढ़ाने लगा। उसे जो पैसे मिलते। वह पापा को दे देता था। दोस्त ने सचिन को बी टेक करवा दी। पास होने के साथ ही उसका प्लेसमेंट हो गया। वह एक बड़ी कम्पनी में इंजीनियर बन गया। नौकरी को तीसरा वर्ष चल रहा था सचिन को लगा क्यों न मैं भी एक मकान खरीद लूं तो कमरे के किराये से निजात मिल जाएगी। मम्मी पापा आराम से साथ रहेंगे तो ठीक है। उसने बैंक से बात कर ली थी किन्तु तभी कोरोना महामारी चली जिससे उसे वर्क फ्राम होम कर दिया फिर नौकरी में परेशानी होने लगी। कम्पनी में काम ठप्प हो गया। कम्पनी ने ऐसे तो बहुत से इंजीनियरों को निकाल भी दिया था किन्तु सचिन महत्वपूर्ण वर्कर था इसलिए मालिक ने निकाला नहीं किन्तु कुछ दिन बाद कम्पनी भी बंद हो गई। सभी कर्मचारी जैसे आसमान से जमीन पर गिर पड़े। सचिन ने फ्लैट लेने का प्लान कार्य ठन्डे बस्ते में डाल दिया। एक दिन सचिन को नौकरी से हाथ धोना पड़ा। वह अर्श से फर्श पर आ चुका था अब वह वापस अपने मम्मी पापा के पास घर आ चुका था।

सचिन घर आ कर काफी परेशान था किन्तु उसके मम्मी पापा बहुत ही खुश थे, उन्हें यह मालूम था कि बेटा होशियार समझदार है कल कुछ न कुछ कर ही लेगा। पिता ने उससे पूछा "तू क्यों परेशान होता है हमारा कमरा किराया का ही सही किन्तु मकान मालिक बहुत अच्छे हैं। फिर तूने आज तक जो पैसा भेजा है वह हमने खर्च थोड़े ही किया है। करते भी

क्यों हमारी बहुत इच्छाएं आकांक्षाएं तो हैं नहीं, हम दोनों स्वयं इतना कमा लेते हैं कि पूरा खर्च नहीं हो पाता फिर रास्ता तूने ही तो बताया था कि पोस्ट आफिस/बैंक में आर डी खोल लो पैसा जमा करना निकालना तूने सिखा दिया था। हम दोनों का तूने ही तो जीवन बीमा करवा दिया था। तेरी मां ने तो तेरी भी एक पालिसी करवा कर रखी है। मुझे लगता है बैंक में तेरे भेजे हुए अच्छे खासे पैसे जमा हैं फिर इतनी बड़ी कम्पनी का इंजीनियर क्यों परेशान होता है। तेरे बताए रास्ते पर चल कर तो हमारी दिशा और दशा बदल चुकी है इन पांच वर्षों के बीच तेरे कहने पर हमने जो जमीन का तीन बिस्से का टुकड़ा ले लिया था अब तो वहां पर सड़क बन गई बहुत से बड़े मकान बन गए हैं बस हमारा ही प्लॉट बचा है। उसके आज की तारीख में अच्छे खासे पैसे भी मिल सकते हैं।”

सचिन ने कहा “पापा मजदूर का बेटा कितना ही इंटेलीजेन्ट क्यों न हो उसकी गिनती मजदूरों के साथ ही की जाती है। आज नौकरी मिलने से पहले उसका स्टेटस भी देखा जाता है। यदि मैं भी किसी बड़े घर का या बड़े बाप का बेटा होता तो कई सारी नौकरियों के आफर लोग घर पर ले कर आते। कई लोग सलाम ठोकते किन्तु मैं मजदूर का बेटा हूँ इसलिए मेरी इतनी कद्र नहीं है। हां मैं जो काम करता हूँ, वह और जो जानता हूँ उसी कारण मेरी कम्पनी मुझे तुरंत नहीं निकाल पाई अन्यथा मेरे कई साथी जिनकी कोई जान पहचान नहीं थी उन्हें लॉकडाउन से पहले ही काम से निकाल दिया था, लेकिन मेरा काम कम्पनी के लिए बहुत जरूरी था। या तो वहां मैं था या कम्पनी मालिक के पहचान वाले बड़े लोगों के लड़के। जिन्हें कम्पनी तुरन्त नहीं निकाल पाई। कुछ दिन बाद सचिन अपने माता पिता के साथ उस बिल्डिंग को निहार रहा था जहां उसके माता पिता मजदूरी करते थे। तभी उधर बिल्डर पहुंच गया उसने सचिन से पूछा “आप” सचिन बोला जी मेरा नाम सचिन है। मैं सिविल इंजीनियर हूँ। पांच वर्षों से एक कम्पनी में काम कर रहा हूँ। लॉकडाउन के कारण आज कल बेरोजगार हूँ। हां मेरा एक शोध चल रहा है। पूरा होने पर कुछ और करना चाहता हूँ।” बिल्डर बड़ा इम्प्रेस हुआ उसने कहा ‘सिविल इंजीनियर की मुझे भी आवश्यकता है मेरा इंजीनियर भी लॉकडाउन से पहले ही नौकरी छोड़ कर चला गया आप चाहें तो मेरे यहां काम कर सकते हैं। क्या तनखाह लोगे।’ सचिन बोला आप बताओ पहले वाले को जो वेतन देते थे वही दे देना।” बिल्डर ने सोचा मेरा इंजीनियर तो बहुत पुराना था इतने पैसे कैसे दे दूं। वह बोला ‘सचिन जी वहां कितना वेतन लेते थे?’ सचिन बोला वहां तो वेतन बहुत ज्यादा था। उसे छोड़ दीजिए आप क्या दोगे।’ मेरे लिए भी ठीक हो जाएगा। मेरे पिता और मेरी मां भी यहीं काम कर रहे हैं। यह सुनते ही बिल्डर का माथा ठनका उसने सोचा, डिग्री होल्डर तो बहुत बड़ा है। अच्छी कम्पनी में काम भी कर चुका है। लेकिन आजकल तो यह भी पैसे के लिए मजबूर होगा। बाकी मजदूर का ही तो बेटा है अधिक वेतन देने से क्या लाभ। उसने कहा ‘वहां कितना मिला था वह तो बता दो।’ सचिन बोला सर उसे जान कर क्या करोगे सर उतना तो आप नहीं दोगे मुझे मालूम है। आप क्या दोगे वह बता दो। बिल्डर को लगा क्या मिलता होगा साठ सत्तर हजार ही तो मिलता होगा। उसने कहा अगर ‘आप बता दो तो मुझे भी जानकारी हो जाएगी।’ सचिन ने अपनी एक सेलरी स्लिप बिल्डर के आगे बढ़ा दी। स्लिप में तीन लाख रूपए प्रति माह लिखा था।

बिल्डर की आंखे फटी की फटी रह गई। थोड़ी देर सोचने के बाद वह बोला 'यह तो बहुत ज्यादा है। मैं आपको चालीस हजार रूपए प्रतिमाह दे सकता हूं।' बिल्डर को लगा इतने में हां तो नहीं करेगा, किन्तु कहेगा तो दस हजार और दे दूंगा। सचिन ने चालीस हजार पर ही हां कर दी 'ठीक है कब से काम पर आ जाऊं।' सचिन जानता था कि ना कहना ठीक नहीं ना ही खाली बैठना। मम्मी पापा यहीं काम करते हैं। कार में एक साथ ही आना जाना हो जाएगा बाकी सब ठीक है किस्मत को जो भी मंजूर है। सचिन बोला 'सर मैं इतने पैसे में आपसे कोई बांड साइन नहीं करूंगा।' बिल्डर बोला 'उसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है।' इधर सचिन का शोध कार्य चल रहा था। थोड़े ही दिनों में सचिन ने उच्च गुणवत्ता और कम खर्च के बहुत से प्लान इम्प्लीमेंट कर बिल्डर को काफी मुनाफा देने लगा। बिल्डर को सारी बात समझ में आ गयी कि सचिन ने तीन लाख वेतन झूठ नहीं कहा वास्तव में वह इसका हकदार है लेकिन मैं तीन लाख तो नहीं दूंगा किन्तु दो-चार महीने बाद एक लाख वेतन तो देना ही पड़ेगा। बिल्डर लालच पालता रहा सोचता था सचिन कुछ नहीं कहेगा तो अगले महीने से एक लाख वेतन दे दूंगा। इस तरह पांच महीने पूरे हुए, छट्वां महीना आरम्भ हुआ, बिल्डर स्वयं सचिन के केबिन में आया। सचिन ने खड़े होकर नमस्ते की। बिल्डर ने हाल चाल पूछ कर कहा, 'बैठो भई तुम्हारे काम के स्टाइल से मैं बहुत प्रभावित हूं।' तुमने तो आते ही धमाल मचा दिया। मेरी कम्पनी को वो प्रोजेक्ट मिल गया है जिसे मैं सपने में भी सोच नहीं सकता था इस खुशी के कारण मैं इस माह से आपको एक लाख वेतन देना चाहता हूं। ठीक है।' सचिन ने सरलता से कहा 'धन्यवाद सर।' सर मैं अपनी बात कहने की इजाजत चाहता हूं। आशा करता हूं आप ना नहीं करेंगे।' बिल्डर बोला तुम्हारे लिए ना हो ही नहीं सकती। इजाजत दी।' बिल्डर सोच रहा था दस बीस क्या अगर पचास हजार और भी कहेगा तो ना नहीं करूंगा। सचिन ने नम्रता से कहा, सर मेरा शोध पूर्ण हो चुका है और मेरी कम्पनी ने मुझे काफी दिन पहले बुलावा भेज दिया था बस मैं आपके पास आने से संकोच कर रहा था। अगले माह मैं अपने माता-पिता को भी अपने साथ लेकर जाऊंगा। आपने मुझे अपने प्रतिष्ठान में काम करने का अवसर दिया। इसके लिए मैं आपका आभारी रहूंगा। □



महासर्वेक्षक कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एक संक्षिप्त रिपोर्ट ।

—श्रीमती पूनम काला
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून ।

महासर्वेक्षक का कार्यालय में भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम एवं निर्देशों के अनुपालन तथा कार्यान्वयन हेतु मुख्यालय स्तर पर सतत प्रयास किए गए जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट निम्नवत् है ।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों का आयोजन:—वर्ष 2020-21 के दौरान महासर्वेक्षक का कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया गया उक्त बैठकों में संघ का राजकीय कार्य हिन्दी में करने के लिए सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विचार-विमर्श किया गया ।

हिन्दी गृह पत्रिका "सर्वेक्षण" दर्पण के 18वें अंक का ई पत्रिका का प्रकाशन: राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के हिन्दी लेखन को सृजनात्मक बनाने के उद्देश्य से श्री नवीन तोमर, भारत के महासर्वेक्षक द्वारा ई पत्रिका का विमोचन किया गया ।

हिन्दी पत्राचार

वर्ष 2020-2021 के दौरान संघ का राजकीय कार्य हिन्दी में करने के लिए म.स.का. में सघन उपाय किए गए । राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत सभी कागजात द्विभाषी जारी किए गए । हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया गया । जिसके फलस्वरूप वर्ष 20120-2021 की अवधि में कार्यालय द्वारा 'क' 'ख' 'ग' क्षेत्र के साथ हिन्दी पत्राचार का प्रतिशत निम्नवत् रहा :-

अवधि	'क' क्षेत्र में	'ख' क्षेत्र में	'ग' क्षेत्र में
30 जून, 2020	89.2%	94.5%	88%
30 सितम्बर, 2020	96.3%	98%	93.7%
31 दिसम्बर, 2020	96.7%	98.2%	93.3%
31 मार्च, 2021	95.3%	95.7%	89.1%

प्रोत्साहन योजना

वर्ष 2020–2021 के दौरान सरकारी कामकाज मूलरूप से हिन्दी में करने के लिए टिप्पण और आलेखन तथा हिन्दी टाइपिंग की प्रोत्साहन योजना लागू रही। हिन्दी में टिप्पण और आलेखन की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत कार्यालय के 6 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा/समारोह का आयोजन:—महासर्वेक्षक कार्यालय में 01 से 15 सितम्बर 2020 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर हिन्दी विषयक विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।



हिन्दी विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन



महासर्वेक्षक कार्यालय में 01 सितम्बर से 04 सितम्बर, 2020 तक आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नवत् है :-

1 हिन्दी में श्रुतलेख (डिक्टेशन) :(ग्रुप 'ए' अधिकारियों के लिए)			
1)	श्री पंकज मिश्रा, उप महासर्वेक्षक	-	प्रथम
2)	श्री सिद्धान्त सेन, अधीक्षक सर्वेक्षक	-	द्वितीय
3)	कर्नल अमरदीप सिंह, अपर महासर्वेक्षक	-	तृतीय
4)	श्री प्रदीप सिंह, उप निदेशक	-	प्रोत्साहन
5)	श्री मोहनराम, अधीक्षक सर्वेक्षक	-	प्रोत्साहन
6)	कर्नल सुमन कुमार सरकार, उप महासर्वेक्षक	-	प्रोत्साहन
7)	कर्नल अरिन्दम गुप्ता, उप महासर्वेक्षक	-	प्रोत्साहन
2 हिन्दी निबंध :-			
1)	श्री रणजीत सिंह, सहायक, स्था०-1 अनुभाग	-	प्रथम
2)	श्री जय सिंह, सर्वेक्षण सहायक, तकनीकी अनुभाग	-	द्वितीय
3)	श्री राजीव कुमार वर्मा, सहायक, सतर्कता अनुभाग	-	तृतीय
4)	श्री रीतेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक, विनियम अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5)	श्री मुनीश कोहली, सहायक, स्थापना-1 अनुभाग	-	प्रोत्साहन

3 हिन्दी में टिप्पण और आलेखन :- (तकनीकी संवर्ग के लिए)			
1)	श्री आर० के० थपलियाल, अधिकारी सर्वेक्षक त०अनुभाग	-	प्रथम
2)	श्री नवीन कुमार शर्मा, सर्वेक्षक, तकनीकी अनुभाग	-	द्वितीय
3)	श्री एस० के० बछवाण, अधिकारी सर्वेक्षक, त० अनुभाग	-	तृतीय
4)	श्री मनजीत सिंह पाल, सीनियर रिप्रोग्राफर, उप भंडार अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5)	श्री सुनील कुमार रट्टी, अधि० सर्वेक्षक, तकनीकी अनुभाग	-	प्रोत्साहन
4 हिन्दी में टिप्पण और आलेखन :- (मिनिस्टीरियल संवर्ग के लिए)			
1)	श्री मुनीश कोहली, सहायक, स्थापना-1 अनुभाग	-	प्रथम
2)	श्री राजीव कुमार वर्मा, सहायक, सतर्कता अनुभाग	-	द्वितीय
3)	श्री डी०एस० रावत, कार्यालय अधीक्षक, स्था०-1 अनुभाग	-	तृतीय
4)	श्री रमेश सिंह कठैत, सहायक, गोपनीय अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5)	श्री रीतेश कुमार, प्र०श्रे०लि०, विनियम अनुभाग	-	प्रोत्साहन
6)	श्री दीपक कुमार, सहायक, गोपनीय अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5 हिन्दी में श्रुतलेख (डिक्टेसन) :- (ग्रुप 'सी' पूर्व में ग्रुप 'डी' के लिए)			
1)	श्री कैलाश कुमार, स्था०प्रशा०एवं वे० अनुभाग	-	प्रथम
2)	श्रीमती सुनीता, स्था०-1 अनुभाग	-	द्वितीय
3)	श्री मुशीर अहमद खान, स्था० प्रशा० एवं वेतन अनुभाग	-	तृतीय
4)	श्री जसवीर सिंह, हिंदी अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5)	श्री विशाल, सुरक्षा अनुभाग	-	प्रोत्साहन
6)	श्री रंजीत राम, गोपनीय अनुभाग	-	प्रोत्साहन
7)	श्री शिव राम कलीता, स्था० प्रशा० एवं वेतन अनुभाग	-	प्रोत्साहन
6 कंप्यूटर पर हिन्दी में वर्ड प्रोसेसिंग :-			
1)	श्री अनुज कुमार, प्र० श्रे० लि०, स्था० प्रशा० एवं वेतन अनुभाग	-	प्रथम
2)	श्री राकेश कुमार, अवर श्रेणी लिपिक, स्थापना-3 अनुभाग	-	द्वितीय
3)	श्री राजेश सिंह, सहायक, स्था०1 अनुभाग	-	तृतीय
4)	श्री शान्ति प्रकाश, हिंदी अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5)	श्री बचन सिंह, अवर श्रेणी लिपिक, आर०टी०आई, अनुभाग	-	प्रोत्साहन

श्री नवीन तोमर, भारत के महासर्वेक्षक, कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते हुए ।



श्री प्रशान्त कुमार, उपमहासर्वेक्षक, कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते हुए ।



डॉ० यू० एन० मिश्रा, उपमहासर्वेक्षक, कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते हुए ।



श्री नितिन जोशी, उपमहासर्वेक्षक, कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते हुए ।



श्री प्रदीप सिंह, तकनीकी सचिव, कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते हुए ।



श्री मोहन राम, सहायक महासर्वेक्षक, कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते हुए ।



महासर्वेक्षक कार्यालय में आयोजित राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां

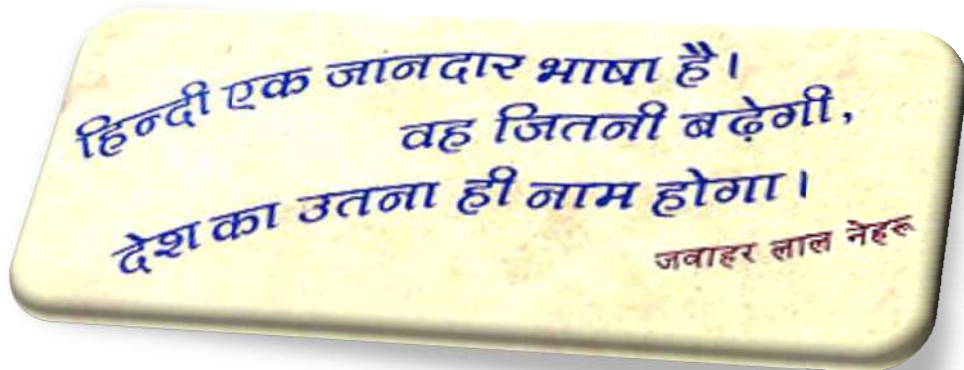


महासर्वेक्षक कार्यालय में आयोजित राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां



मुहावरे और लोकोक्तियां

1.	अंधेरे में छलांग लगाना	TO leap in the dark .
2.	अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता	One swallow does not make a summer.
3.	आंख का तारा होना	The apple of one's eyes.
4.	आंख खुल जाना/आंखे खोलना	To open one's eyes.
5.	एक कान से सुनना दूसरे से निकाल देना	In at one ear and out at the other.
6.	एक पंथ दो काज	TO kill two birds with one stone.
7.	कुत्ते की पूंछ टेढ़ी की टेढ़ी	A leopard never changes its stripes.
8.	कौड़ी-कौड़ी से माया जुड़ती है	Penny and penny laid up will be many.
9 .	गधा पीटने से घोड़ा नहीं होता	The Ethiopian never changes his skin.
10.	गुड़ न दे गुड़ की सी बात तो कहे	Honey in the mouth saves the purse.
11.	घर का भेदी लंका ढाए	Traitors are the worst enemies.
12.	चढ़ते सूर्य को नमस्कार करना	TO worship the rising sun.
13.	चिंता बुरी बला	Care is no cure.
14.	चित भी मेरी पट भी मेरी	Heads I win, tails you lose.
15.	जैसा करोगे वैसा भरोगे	As you sow, so small you reap.
16.	जो गरजते हैं वे बरसते नहीं है	Barking dogs seldom bite.
17.	दांत खट्टे करना	To give a tough fight.
18.	दूध को दूध और पानी को पानी कहना	To say what is true without fear or favour.
19.	दूध घी की नदियां बहना	Flowing with milk and honey.
20.	दूर के ढोल सुहावने	Blue are the hills that are far away.
21.	देखें ऊंट किस करवट बैठता है	Let us see which way the wind blows.
22.	धूल में लट्ठ मारना	A leap in the dark.
23.	न कुछ से कुछ भला	Something is better than nothing.
24.	नाच ना जाने आंगन टेढ़ा	A bad workman quarrels with his tools.
25.	पानी में रहकर मगर से बैर	TO live in Rome and quarrel with the pope.





सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), देहरादून।

प्रशस्ति-पत्र

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), देहरादून के केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों के वर्ग में भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून को वर्ष 2019-20 में राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त करने के लिए यह प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

हरीश मिश्र

अधीक्षक सर्वेक्षक व प्रभारी (रा०भा०)
एवं सदस्य-सचिव
नगर राजभाषा कार्यान्वयन
समिति (कार्यालय-1), देहरादून।

श्रीश मिश्र

भारत के महासर्वेक्षक
एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन
समिति (कार्यालय-1)
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून।

10 नवम्बर, 2020

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय -1) देहरादून, द्वारा हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन करने के लिए भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय को प्रोत्साहन पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया।

“सर्वेक्षण गौरव गीत”

दुनिया वालों ! सुनो कहानी, सर्वेक्षण के काम की,
यही बात सबके गौरव की, आन-बान और शान की,
जय-जय सर्वेक्षण..... जय हो सर्वेक्षण ।

सत्रह सौ सड़सठ से हमने, नये-नये आयाम दिये,
हिमालय को नापकर हमने, जग को नये परिणाम दिये,
अपने ज्ञान की भोर में हमने तारों तक को पढ़ डाला,
भारत माँ के स्वर्ण मुकुट पर, मणी-रत्नों को जड़ डाला,
हमें प्राणों से भी ज्यादा चिन्ता, मातृ भूमि के मान की, जय-जय सर्वेक्षण ... ।

तीन कदम में तीन लोक को, हमने ही तो नापा था,
सर्वेक्षण का हमने ही तो, जग में खींचा खाका था,
'किशन सिंह 'और 'नैन सिंह 'ने, इसी रीति को अपनाया,
तभी ' फिरंगी 'ने भी जिसको, मुक्त कण्ठ होकर गाया,
खुश होकर के उपाधि दी थी, "पंडित जी "के नाम की, जय-जय सर्वेक्षण.. ।

सर्वेक्षण के बल पर हमने, सीमाओं को आँका है,
दुःश्मन की हर चाल को हमने, इसके बल पर भौंपा है,
अपनी परवाह करी कभी ना, इंच-इंच को नापा है,
हम हैं वीर सिपाही ऐसे, जो बात बड़े अभिमान की, जय-जय सर्वेक्षण ... ।

सर्वेक्षण से किसी देश की, होती निज पहिचान है,
सीमाएं हैं वहीं सुरक्षित, जहाँ सर्वेक्षण का ज्ञान है,
यही बात है सर्वे के हित बहुत बड़े सम्मान की
मूल भावना यही साथियों, अपने हर आवाहन की, जय-जय सर्वेक्षण... ।

सर्वेक्षण बिन दुर्बल हैं सब, यही किसी देश का बल है परम् ,
और तभी हमारा मूल वाक्य है ,“आ सेतु-हिमाचलम् ”
बढ़ी प्रतिष्ठा मेरे देश की, मान और अभिमान की,
यही कहानी है भारत के गौरव की बलिदान की, जय-जय सर्वेक्षण,..... ।

बौद्धिक बसन्त हो मानवता में, शिक्षित हो हर माँ का लाल,
हो उन्नत मस्तक हिम गिरीश वत् , मानवता हो जाये निहाल,
विश्व गुरु बन जाए भारत , और जय हो हिन्दोस्तान की ,
जय-जय सर्वेक्षण जय-जय हो सर्वेक्षण..... ।

अमर रहे आजादी अपनी, अमर हमारे शोध हों,
रमा हो सर्वे जन-गण-मन में, कर्तव्यों का बोध हो,
कर्म करें हम फल इच्छा बिन ,न चिन्ता हो परिणाम की,
यही बात तो रही है अपने ,सर्वेक्षण के उत्थान की, जय-जय सर्वेक्षण...

— अमरदेव बहुगुणा